दिसम्बर-२०२३ ◆ वर्ष १२ ◆ अंक ०८ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

दिसम्बर-२०२३

चमत्कार को नमस्कार जो करते हैं, घोर अविद्या की दलदल में फसते हैं।
सत्य मार्ग पर वे मनुष्य चल पड़ते हैं, जो सत्यार्थ प्रकाश ऋषि का पढ़ते हैं।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१५ १४६

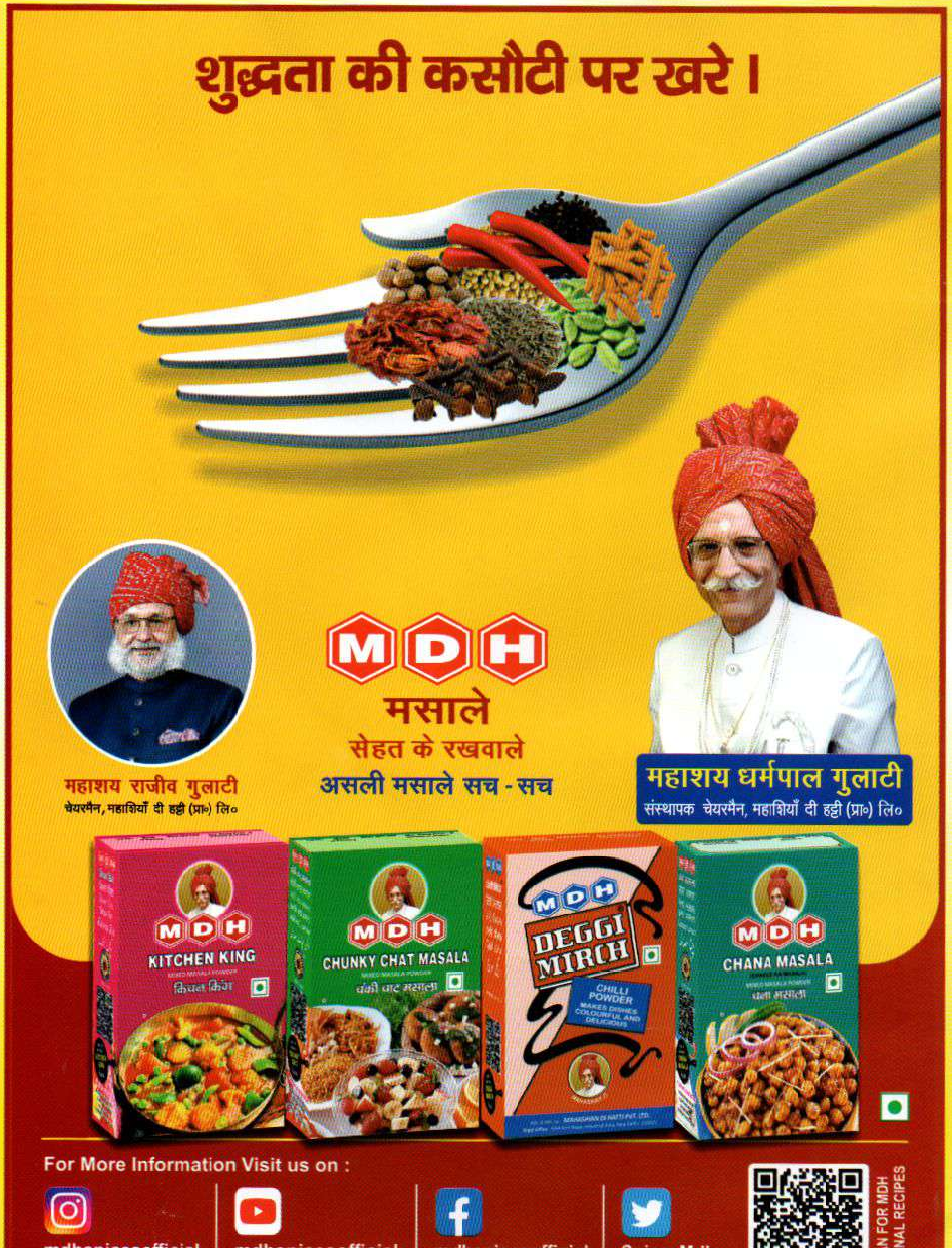

शुद्धता की कसौटी पर खरे।
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच - सच
महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
KITCHEN KING
किचन किंग
CHUNKY CHAT MASALA
चंकी चाट मसाला
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
CHANA MASALA
चना मसाला
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमाँसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)
नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक
भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२४
मार्गशीर्ष कृष्ण दशमी
विक्रम संवत्
२०८०
दयानन्दाब्द
१९९

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

December - 2023

समाचार २९

हलचल ३०

०४	वेद सुधा
०६	सत्यार्थ मित्र बनें
१३	मृत्योर्माऽमृतं गमय
१६	महर्षि दयानन्द के दो सौ उपकार
१८	जीवित शहीद मथुरवा
१९	फीकी न पड़ने वाली मिठास
२०	बुजुर्ग क्यों रह जाते हैं अकेले?
२५	स्वास्थ्य- हेमन्त ऋतु
२७	कथा सरित- कहानी दयानन्द की

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
5000 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १२ | अंक -०८

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

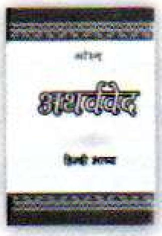

वेद सुधा

पूर्वजों के मार्ग पर चल

मैतं पन्थामनु गा भीम एष येन पूर्वं नेयथ तं ब्रवीमि।
तम एतत्पुरुष मा प्र पत्था भयं परस्तादभयं ते अर्वाक्।। - अथर्व. ८/१/१०

एतम् पन्थाम्– इस मार्ग पर, **मा अनु+गाः**– मत चल, **एषः भीमः**– (क्योंकि) यह भीम {है}। **येन**– जिस {मार्ग} से, **पूर्वम्**– पहले, **नेयथ**– ले जाया गया, **तं ब्रवीमि**– उसे बताता हूँ। **पुरुष**– हे पुरुष! नागरिक! **एतत् तमः**– इस अन्धकार को, **मा प्र+पत्थाः**– मत प्राप्त हो अथवा इस अन्धकार में मत गिर। **परस्तात् भयम्**– पिछली ओर भय {है}। **अर्वाक्**– इस ओर, **ते अभयम्**– तुझे अभय {है}।

व्याख्या

जीवन का मार्ग बहुत बीहड़ और भयानक है। इसमें बड़े-बड़े समझदार कहे और समझे जाने वाले महानुभव भटक जाते हैं, मार्ग भ्रष्ट हो जाते हैं, साधारणजनों का तो कहना ही क्या है? **कः पन्थाः?** मार्ग कौन-सा है? यह सनतान प्रश्न है। सब कालों और सब देशों में यह प्रश्न विचारकों के सामने आया है। बहुत थोड़े ऐसे भाग्यवान् हैं, जो इस प्रश्न का पूरा समाधान कर सके हैं और तदनुसार जीवन-यात्रा कर सके हैं।

मैतं पन्थामनुगाः - मत इस राह पर चल।

सभी मनुष्यों का यह अनुभव है कि कठोर कर्तव्य के समय उन्हें सांसारिक मोह घेर लेता है। न्यायाधीश का अपना पुत्र अपराधी के रूप में उसके सामने उपस्थित किया जाता है। अपराध प्रमाणित हो जाता है, किन्तु सुत-मोह, पुत्र-प्रेम जब न्याय के मार्ग में आ खड़ा होता है, वह न्याय नहीं करने देता। क्या वह-

गुरुपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्।

कानून भंग करने वाले को चाहे वह धर्मोल्लंघन करने वाला पुत्र हो या शत्रु हो-न्याय-व्यवस्थानुसार अवश्य दण्ड देता है? न! न! वह फिसल जाता है। वह मार्ग छोड़ बैठता है। वह उस मार्ग पर चलता है, जिसके लिए वेद कहता है-

मैतं पन्थामनु गाः - मत इस राह पर चल।

मनुष्य जीवन का लक्ष्य क्या है? क्या खाना, पीना, भोग करना और बस?

बहुत पुराने काल में रावण ने भगवती सीता से कहा था-

'भङ्क्ष्व भोगान् यथाकामं पिब भीरु रमस्व च।' - वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड, २०/२४

सीते! यथेच्छ भोग भोग! खा, पी और मौज कर।

'पिब विहर रमस्व भुंक्ष्व भोगान्।' - वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड २०/३५

पी, विहार कर, रमण कर, भोगों को भोग।

किन्तु सीता माता ने वेद में पढ़ रखा था- **मैतं पन्थामनु गाः।**

सीता इस मार्ग पर न चली, राक्षस रावण के प्रणय-प्रलाप को उसने ठुकरा दिया।

भोग भोगना मनुष्य का धर्म नहीं। क्या मनुष्य भोग में- खान-पान आदि विषयों में-पशुओं की समता कर सकता है? क्या कोई हाथी के बराबर खा सकता है?

भोग तो राक्षसों का धर्म है। स्वयं रावण ने कहा-

स्वधर्मो रक्षसां भीरु सर्वथैव न संशयः।
गमनं वा परस्त्रीणां हरणं संप्रमथ्य वा।। - वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड २०/५

हे धर्मभीरु सीते! परस्त्रीगमन (व्याभिचार) = भोग, परदाराहरण यह तो राक्षसों का स्वधर्म है।

तो क्या हम राक्षस बनें? वेद कहता है- न भाई! **भीमः एषः**- यह मार्ग भयंकर है।

आज भी जो 'eat, drink and be merry' खाओ, पिओ, आनन्द करो का उपदेश करते हैं, वे रावण का समर्थन करते हैं, राक्षसधर्म का प्रचार करते हैं।

जब जीवन-यात्रा के लिए मनुष्य तैयार होता है, तब उसके सामने दोराहा आता है। एक मार्ग पर सब लुभावनी सामग्री नाच, गान, स्त्री, खान-पान आदि होता है, दूसरे पर ऐसा कुछ दीखता नहीं। मनुष्य-साधारण मनुष्य=अपरिपक्व विवेक वाला मनुष्य- पहले मार्ग को चुनता है। कारण दो हैं- मन्दमति और सांसारिक लालसाओं की पूर्ति की सम्भावना। यम ने नचिकेता को इस दोराहे की बात भली-भाँति समझाई थी। उसने कहा था-

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेत:l - कठो. १/२/२

श्रेयोमार्ग और प्रेयोमार्ग दोनों ही मनुष्य को मिलते हैं, किन्तु-

प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीतेl - कठो. १/२/२

मन्दमति मूर्ख, योगक्षेम के कारण-सांसारिक भोग भावना के कारण-प्रेयोमार्ग को पसन्द करता है। मूर्ख दोनों का भेद नहीं जानता, वह उनमें पहचान नहीं कर पाता। पहचान तो धैर्यवान्, विचारशील ही कर सकता है-

तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीर:l - कठो. १/२/२

धीर मनुष्य ही उन दोनों-श्रेय और प्रेय मार्गों की जाँच करके भेद कर सकता है, पहचान कर सकता है?

महाज्ञानी-मूढ़ ही इस प्रेयोमार्ग पर चलते हैं। यम कहता है-

अविद्यायामन्तरे वर्त्तमाना: स्वयं धीरा: पण्डितम्मन्यमाना:l
दन्द्रम्यमाणा: परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धा:ll - कठो. १/२/५

जो अविद्या में फँसे हैं, किन्तु अपने-आपको ध्यानी और पण्डित मान रहे हैं, ऐसे दुरवस्था में ग्रस्त महामूढ़ लोग ही इस मार्ग पर चलते हैं। वे स्वयं अन्धे हैं, अन्धों ही के पीछे चल रहे हैं।

वेद कहता है, मत चल इस मार्ग पर। तुझे मैं मार्ग बताता हूँ। पहले भी इसी मार्ग से तुझे और तेरे बड़ों को चलाया था-

येन पूर्वं नेयथ ते ब्रवीमिl

अरे! यह अन्धकार से ढका है। अन्धकार मृत्यु है। प्रकाश जीवन है। तू अन्धकार में मत फँस। भगवान् ने कहा-

तम एतत् पुरुष मा प्रपत्था:l

नगर के रहनेवाले! यह अन्धकार है, इसमें मत गिर। नगरवासी तो प्रकाश का अभ्यासी है।

पुरुष की यह नगरी देह-ज्योति से आवृत्त है। प्रकाश से ओत-प्रोत का अन्धकार में गिरना लज्जास्पद है। यदि संसार-पथ=प्रेयोमार्ग=भोग पद्धति इतनी भयावह है, तो ऐसा हमें प्रतीत क्यों नहीं होता? इस पुराने प्रश्न की मीमांसा यम ने इस प्रकार की है-

न साम्पराय:प्रतिभाति बालं प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढम्l
अयं लोको नास्ति पर इति मानी पुन: पुनर्वशमापद्यते मेll - कठो. १/२/६

यह साम्पराय-आनी-जानी दुनिया=विनश्वर संसार बालक को=मूढ़ अज्ञानी को नहीं दिखता, प्रमादी को भी नहीं सूझता। भर्तृहरि के शब्दों में उसने तो शराब पी रखी है- **पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरामुन्मत्तभूतं जगत्l** प्रमाद की मोहक मदिरा=शराब पीकर संसार पागल हो रहा है। धन के मद में मत्त भी इसको नहीं देखता। धन का नाश बड़ा तीव्र होता है। इन तीनों की दृष्टि इस संसार से परे नहीं जाती। वे इस लोक एवं अपने देह को ही सब-कुछ समझते हैं, अतः जन्म-मरण के चक्कर में फँसे रहते हैं।

वेद कहता है- **'भयं परस्तात्'** अरे! पीछे तो भय है। अतः इस पर मत चल।

अभयं ते अर्वाक्- इस ओर अभय है। आ, इधर चल।

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- वे. शा. श्री स्वामी वेदानन्दतीर्थ सरस्वती
सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, साभार- स्वाध्याय-सन्दीप

❑❑❑

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

न्यास के अद्भुत प्रकल्प NMCC को निर्बाध गति प्रदान करने हेतु **श्रीमती सिमरन जी आर्या;** कोलकाता ने आजीवन सत्यार्थ मित्र (₹51000) के रूप में सहयोग प्रदान किया है। अनेकशः धन्यवाद

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को सम्बल प्रदान करने हेतु **श्री यश जी आर्य;** कोलकाता ने संरक्षक सदस्यता (₹ 11000) ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद

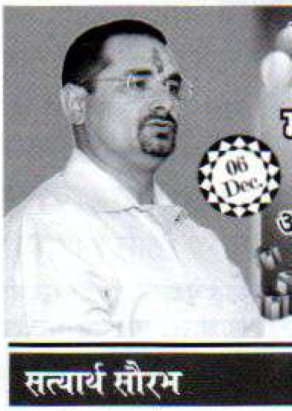

कर्मयोगी, समाजसेवी, आर्यश्रेष्ठि इस न्यास के वरिष्ठ उपाध्यक्ष **माननीय श्री विजय जी शर्मा** को उनके जन्मदिवस के पावन अवसर पर न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को सम्बल प्रदान करने हेतु **श्रीमती ममता जी आर्या;** नई दिल्ली ने संरक्षक सदस्यता (₹ 11000) ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद

आत्म निवेदन

जाति है कि जाती नहीं

विश्वभर के मनुष्य एक जाति हैं– सर्व प्रथम यह समझें

जन्मगत जाति व्यवस्था जब भी प्रारम्भ हुयी इसने भारतीय समाज के ढाँचे को ऐसा धक्का दिया, विषमता की ऐसी खाई निर्मित की कि आज तक यह देश उससे उबर नहीं पाया है। अनेक महापुरुषों द्वारा जन्मगत जाति व्यवस्था के विरुद्ध बिगुल बजाने, शिक्षा की पहुँच अन्तिम व्यक्ति तक होने, प्राकृतिक न्याय के प्रति संवेदना में वृद्धि होने तथा मैला ढोने और ऐसी ही अन्य अमानवीय प्रथाओं का वैज्ञानिक आविष्कारों से प्रस्थापन होने एवं अस्पृश्यता करने वाले को दण्ड व्यवस्था के अधीन होने आदि कारणों से काफी हद तक जन्मगत जाति के आधार पर होने वाले अत्याचारों में कमी आयी है, इसमें कोई सन्देह नहीं और यह भी आशा की जा सकती है कि इसका निर्मूलन भी शीघ्र हो सकता है। **परन्तु स्वार्थी पदलोलुप राजनीतिज्ञों का क्या करें? शान्त होते जल को वे स्थिर नहीं होने देना चाहते अतः बीच-बीच में कंकड़-पत्थर फैंक फिर से हलचल मचा देते हैं। समाज में परस्पर वैमनस्य का पुनः प्रादुर्भाव होगा इससे उन्हें कोई लेना देना नहीं।** पूर्व में हुए मण्डल की तर्ज पर अब पुनः जातीय सर्वे के नाम पर बिहार में यह प्रपंच प्रारम्भ कर दिया गया है। पूर्णतः निराश विपक्ष को चुनाव की वैतरणी पार करने के लिए अब समाज को तोड़ने वाली प्रणाली में संजीवनी दृग्गत् हुयी है, अतः सब इस पर जुट गए हैं। कांग्रेस के एक प्रमुख नेता ने तो एक पुराना नारा दोहरा दिया है कि **'जिसकी जितनी संख्या भारी उसकी उतनी हिस्सेदारी।'** वो यह नहीं बताते कि पूर्व में इसी नारे से किसका क्या कल्याण हुआ था? क्या होगा यह तो भविष्य बतायेगा, परन्तु कोई आज यह तो नहीं ही कह सकता कि नीची कही जाने वाली जातियों से आज भी अमानवीय काम कराये जाते हैं (अपवाद हो सकते हैं) वर्त्तमान शौचालय के चलते मैला ढ़ोने की प्रथा कब की समाप्त हो गयी है। गटर साफ करने हेतु ऑटोमेशन उपलब्ध है। **पूर्ण विराम के लिए इस क्षेत्र में और भी नयी तकनीकें अपेक्षित हैं।** हमारा मानना है कि भिन्न जातियों के द्वारा किये जाने वाले कार्य अब एक व्यक्ति स्वयं ही कर रहा है। जब वह दाढ़ी बनाता है तो नाई होता है, कोरोना में तो वह बाल भी काटने लगा। जब कपड़े धोता है तो धोबी होता है, जब जूते पालिश करता है तो चर्मकार का कार्य करता है, शौचालय भी वह स्वयं साफ करता है, तो इस प्रकार एक ही व्यक्ति में, चाहे वह कहीं पैदा हुआ हो सभी जातियाँ (जन्माधारित) सिमट गयीं हैं। **अतः आज के दिन आवश्यकता जहाँ जातिभेद को पूर्णतः भुलाकर समरसता स्थापित करने की**

है, वहाँ जन्मगत जाति व्यवस्था को स्थापित करने का प्रयास समाजविरोधी ही कहा जाएगा।

जन्माधारित जाति प्रथा बनाम वर्ण व्यवस्था

समस्या सबसे बड़ी यह है कि उच्च शिक्षित व्यक्ति भी जाति व्यवस्था को तथा वर्ण व्यवस्था को एक मानकर इस कुरीति का दोष वेद तथा आर्ष ग्रन्थों को दे देते हैं। वर्ण व्यवस्था पूर्णतः वैज्ञानिक गत्यात्मक वर्गीकरण है जो किसी पर थोपा नहीं जा सकता। क्योंकि योग्यता के आधार पर इसका वरण होता है। जबकि जन्मगत जाति व्यवस्था ऐसी रूढ़ व्यवस्था है जिसके चयन में आपका कोई भाग नहीं है। आज हम यहाँ पाठकों को वेद और महर्षि दयानन्द की दृष्टि से वर्ण और जाति की वास्तविकता दिखाने का प्रयत्न करेंगे। **निष्पक्ष दृष्टि से देखेंगे तो पायेंगे कि आज आर्यसमाज की पद्धति अपनाने पर ही समरस समाज की स्थापना हो सकती है। अन्य कोई मार्ग नहीं**। आर्य समाज ने यह करके दिखाया है। यह विडम्बना की बात है कि आज आर्य समाज भी या तो उदासीन प्रायः हो गया है अथवा किसी सीमा तक विपरीत दिशा में भी चल पड़ा है।

जाति आखिर है क्या ?

सबसे पहले हमें जाति होती क्या है इसे समझना होगा। वैदिक मनीषा का मानना है ईश्वर द्वारा जो अनगिनत जातियाँ बनायीं गयीं हैं उन्हें आकार और समान प्रसव के आधार पर विभेदित किया जा सकता है। अर्थात् एक जाति का आकार प्रकार मूल रूप से एक होता है {प्राणि-शरीर के अवयव तथा उसके अन्य अवान्तर अवयवों का विशेष सन्निवेश अथवा रचना विशेष का नाम आकृति है} दूसरे एक जाति के नर और मादा के सम्मिलन से उसका वंश बढ़ता है, जबकि भिन्न जाति के नर-मादा से वंश वृद्धि नहीं हो सकती। अर्थात् हाथी, घोड़ा और मनुष्य आदि भिन्न जाति हैं, इनके आयु, भोग और प्रसव भिन्न-भिन्न हैं। मनुष्य का जहाँ तक सवाल है संसार के सभी मनुष्य एक जाति के हैं, भिन्न-भिन्न नहीं। वे आकार में भी समान हैं और विश्व में भिन्न-भिन्न स्थानों में उत्पन्न स्त्री-पुरुष मिलकर सन्तानोत्पत्ति कर सकते हैं।

प्राणिजगत् के प्रत्येक वर्ग में साजात्य प्रजनन की विशेषता देखी जाती है। यह साजात्य प्रजनन जाति धर्म का नियामक है। विजातीय सांकर्य होने पर प्रजनन की क्षमता क्षीण हो जाती है। मानवी पुरुष तथा मादा बन्दर के संयोग से अथवा इसी प्रकार के विजातीय संयोग से सन्तान उत्पन्न नहीं हो सकती। इस प्रकार सभी मनुष्य एक प्रकार या एक जाति के ही हैं। अतः विश्व के काले, गोरे, सभी मतावलम्बी एक ही जाति अर्थात् मानव जाति के ही हैं। अतः भिन्न-भिन्न कुल में जन्म लेने वाले व्यक्ति भिन्न जाति के होते हैं तथा उसके आगे आने वाली संतति भी सभी उसी जाति के रहते हैं, ऐसा मानना अविद्यापरक है, भ्रान्त अवधारणा है।

वर्ण क्या है ? सामवेद-६३८ में कहा है-

त्वꣳ ह्या३ंग दैव्य पवमान जनिमानि द्युमत्तमः । अमृतत्वाय घोषयन् ॥ - ६३८

माता-पिता से एक जन्म मिलता है, दूसरा जन्म आचार्य से प्राप्त होता है। जब शिष्य विद्याव्रत स्नातक होते हैं उस समय आचार्य गुण-कर्मानुसार यह ब्राह्मण है, यह क्षत्रिय है, यह वैश्य है इस प्रकार स्नातकों को वर्ण देते हैं। उस काल में प्रथम जन्म का कोई ब्राह्मण भी गुण-कर्म की कसौटी से क्षत्रिय या वैश्य बन सकता है,क्षत्रिय

भी ब्राह्मण या वैश्य बन सकता है और वैश्य या शूद्र भी ब्राह्मण या क्षत्रिय बन सकता है। (- आ. रामनाथ वेदालंकार)

महर्षि दयानन्द निरुक्त के आधार पर कहते हैं-

वर्णो वृणोतेः ।। - निरु. २/३

भाष्यम्- वर्णो वृणोतेरिति निरुक्तप्रामाण्याद्वरणीया वरीतुमर्हा, गुणकर्माणि च दृष्ट्वा यथायोग्यं व्रियन्ते ये ते वर्णाः।।

भाषार्थ– (वर्णो.) इनका नाम वर्ण इसलिये है कि जैसे जिसके गुण-कर्म हों, वैसा ही उसको अधिकार देना चाहिए। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (वर्णाश्रमविषयः) अर्थात् गुण-कर्मों के आधार पर वर्ण का वरण होता है।

वर्ण और जाति में अन्तर

जैसा हमने ऊपर निरूपित किया कि विश्व भर के मनुष्यों की जाति एक ही है वह है मनुष्य जाति। अब अति संक्षेप में वर्ण और जन्माधारित तथाकथित जाति के मध्य अन्तर लिखते हैं।

१. सबसे पूर्व सभी जान लें कि वर्ण व्यवस्था जन्म से नहीं है।

२. वर्ण का आवंटन शिक्षा की समाप्ति पर योग्यता तथा रुचि के आधार पर गुरु द्वारा किया जाता है।

३. वर्ण व्यवस्था योग्यता तथा कर्म पर आधारित है।

४. जिस कुल, वंश में जन्म हुआ है वर्ण व्यवस्था में उसके वर्ण के निर्धारण में इनका कोई भाग नहीं।

५. योग्यता अर्जन के आधार पर वर्ण परिवर्तन सम्भव है।

६. चारों वर्ण एक समान हैं अथवा उनमें कोई छोटा कोई बड़ा नहीं है। **अस्पृश्य तो कोई है ही नहीं।**

बड़े-छोटे का प्रश्न भी ऐसा है जिसने लोगों को भ्रमित किया हुआ है। वेद स्पष्ट कहता है कि सभी समान हैं। देखिये-

रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रुचꣳराजसु नस्कृधि ।

रुचं विश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम् ।। - यजुर्वेद १८/४८

महर्षि दयानन्द इसका भाष्य करते हुए परमेश्वर की निष्पक्षता की उपमा देते हुए लिखते हैं- जैसे परमेश्वर पक्षपात को छोड़ ब्राह्मणादि वर्णों में समान प्रीति करता है, वैसे ही विद्वान् लोग भी समान प्रीति करें। अर्थात् सभी वर्ण एक दूसरे से प्रीति करें।

इसी मन्त्र के भाष्य के उत्तरार्द्ध को आप देखेंगे तो और स्पष्ट हो जाएगा कि इनमें से कोई वर्ण ऊँचा-नीचा नहीं है, क्योंकि नीच और तिरस्कार के योग्य जो हैं वे बता दिए हैं और उनमें ये चार वर्णस्थ नहीं हैं। वहाँ लिखा है- जो ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव से विरुद्ध वर्त्तमान हैं, वे सब नीच और तिरस्कार करने योग्य होते हैं। अब इससे ज्यादा क्या स्पष्ट प्रमाण हो सकता है कि वेद में किसी वर्ण को छोटा-बड़ा नहीं माना गया है।

यहाँ बड़े-बड़े विद्वान् जिस मन्त्र की चर्चा करते हैं उसके बारे में बात करना आवश्यक है। यह मन्त्र है यजुर्वेद के अध्याय ३१ (पुरुष सूक्त) का ११वाँ मन्त्र। इन लोगों का कहना है कि इसमें ब्राह्मणों को परमात्मा के मुख से, क्षत्रिय को बाहू से, वैश्य को पेट से तथा शूद्र को पैर से उत्पन्न होना लिखा है, अतः यहाँ स्पष्ट रूप से शूद्र को पैर से उत्पन्न होने के कारण नीच बताया है। दूसरा उत्पत्ति के उल्लेख के कारण वर्ण व्यवस्था जन्म से मानी जायेगी।

हमारा निवेदन है कि यह अर्थ ही गलत है। ईश्वर के मुखादि अंग ही नहीं हैं तो उनसे उत्पन्न होने का प्रश्न ही नहीं उठता। वस्तुतः आपके सारे सन्देहों की निवृत्ति के लिए आपसे आग्रह है कि इससे ठीक पूर्व का मन्त्र देखें जिसमें जो प्रश्न किया है उक्त मन्त्र में उसका उत्तर है। उसे न देखना ,समझना ही भ्रम की उत्पत्ति का कारण है।

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् l मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादाऽउच्येते ll - यजुर्वेद ३१/१०

वस्तुतः यहाँ समाज को एक मनुष्य के शरीर के समान मानकर उसके विभिन्न अंगों के समान कार्य करने वाले वर्ण कौन हैं यह पूछा है। और अगले मन्त्र ३१/११ में उत्तर दिया है कि-

मुख के समान ब्राह्मण, बाहू के समान क्षत्रिय, पेट के समान वैश्य तथा पद के समान शूद्र हैं। यहाँ यह भी आप विचार करें मुख मष्तिष्क आदि विचार पूर्वक वाणी के द्वारा निर्देशन करने में सक्षम हैं और यही कार्य अर्थात् अज्ञान के निवारण का कार्य ब्राह्मण का है, तो बाहू आत्मरक्षा तथा आक्रमण का कार्य करते हैं इस प्रकार अन्याय का निवारण करने वाले क्षत्रिय हैं, इसी प्रकार शरीर का उरु प्रदेश उत्पादन और वितरण का कार्य करता है इसी से अभाव का निवारण करने वाले वैश्य को पेट की उपमा दी गयी है तथा सेवाव्रती पैर के तुल्य शूद्र को माना है। सभी वर्ण समान हैं, यह पूर्व वेद मन्त्र से सिद्ध कर चुके हैं। अतः यह कहना और मानना कि समाज के अंगों में ऊँच-नीच की भावना तथा व्यवस्था (?) उत्पन्न करने के स्रोत वेद हैं केवल नासमझी है, और वेद के प्रति अज्ञानता की द्योतक है।

वर्ण व्यवस्था क्या जन्म से है? उत्तर है- नहीं। यजुर्वेद के भाष्य में महर्षि दयानन्द लिखते हैं-

जो मनुष्य विद्या और शम-दम आदि उत्तम गुणों में मुख के तुल्य उत्तम हो वे ब्राह्मण, जो अधिक पराक्रम वाले योद्धा के तुल्य कार्यों को सिद्ध करनेहारे हो वे क्षत्रिय जो व्यवहार विद्या में प्रवीण हों वे वैश्य और जो सेवा में प्रवीण विद्याहीन पदों के समान मूर्खपन आदि नीच (नीचे) गुण युक्त हैं वे शूद्र करने और मानने चाहिए।

- यजुर्वेद भाष्य ३१/११

वर्णों का आधार जन्म नहीं बल्कि योग्यता और रुचि है और तदनुरूप उनके कार्य हैं। महर्षि दयानन्द ने यजुर्वेद के २३वें अध्याय के ४०वें मंत्र का भाष्य करते हुए लिखा है कि 'ब्राह्मण और ब्राह्मणी पढ़ावें, क्षत्रिय और क्षत्रिया रक्षा करें, वैश्य और वैश्या खेती आदि की उन्नति करें और शूद्र उक्त ब्राह्मण आदि की सेवा किया करें।' यहाँ एक बात और लिख दें कि जिन लोगों ने राजनीतिक बवाल खड़ा किया है और सनातन को समूल नष्ट करने की बात लिखी है उसमें वे एक तर्क यह भी देते हैं कि सनातन में लैंगिक असमानता है तो ऊपर जो वेदमंत्र का अर्थ महर्षि दयानन्द ने किया है उसको ध्यान से पढ़ लें **जो कार्य पुरुष के हैं वही कार्य स्त्री के हैं, इसमें लेशमात्र भी असमानता नहीं है।**

यहाँ शूद्र के सेवा कार्य को लेकर के कुछ लोग नाक मुँह चढ़ा सकते हैं कि देखिए इनको नीचा मान करके अन्यों की सेवा के लिए निर्देशित किया गया है। तनिक विचारने की आवश्यकता है जिन-जिन लोगों ने ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य होने की योग्यता प्राप्त कर ली है वे चाहे शूद्रकुल में भी पैदा हुए हों परन्तु अब वे द्विज वर्णों में गिने जाएँगे और उन-उन कार्यों को सम्पादित कर जीविका यापन करेंगे, परन्तु जो किसी भी योग्यता को संपादित नहीं कर पाया वह क्या करेगा? जीवन-निर्वाह के लिए भी क्या करेगा? इसको हम यूँ समझ सकते हैं कि कार्यालय में कई कैडर स्तर के व्यक्ति कार्य करते हैं उनमें एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी भी होते हैं। ये चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी इसलिए हैं कि ये अन्य वर्गों के लिए निर्धारित परीक्षा पास करने में असमर्थ रहे। चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

के रूप में कार्य करते हुए उनको कम से कम अपने जीवन यापन की वृत्ति तो मिलती है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये योग्यता के सम्पादन का प्रयत्न करते रहें तो जिस दिन भी किसी भी वर्ग के लिए निर्धारित परीक्षा पास कर लेंगे उसकी योग्यता को अर्जित कर लेंगे तो इनकी उस पद पर नियुक्ति हो जाएगी। ठीक इसी प्रकार से वर्ण व्यवस्था में है। यह गत्यात्मक व्यवस्था है। जो लोग सनातन की आलोचना करके यह प्रसारित कर रहे हैं कि इसमें एक ऐसा मकान बनाया गया है **जिसमें चार मंजिल का मकान बना हुआ है इसमें दरवाजे खिड़कियाँ तो हैं पर सीढ़ियाँ नहीं है अर्थात् नीचे की मंजिल वाला व्यक्ति ऊपर नहीं जा सकता यह बिल्कुल असत्य बात है।** यह भ्रामक प्रचार है।

कम से कम भारतीय मनीषा के लिए वेद से बढ़कर कोई प्रमाण नहीं है, अतः हम यहाँ वेद का प्रमाण दे रहे हैं-

आ संयतमिन्द्र णः स्वस्तिं शत्रुतूर्याय बृहतीममृध्राम्।
यया दासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रिन्त्सुतुका नाहुषाणि॥ - ऋग्वेद ६/२२/१०

हे राजन्! आप सत्यविद्या के दान और उपदेश से शूद्र के कुल में उत्पन्न हुओं को भी द्विज करिये और सब प्रकार से ऐश्वर्य को प्राप्त कराये तथा शत्रुओं का निवारण करके सुख की वृद्धि कीजिये।

इससे स्पष्ट क्या प्रमाण होगा? यहाँ समाज में शूद्रों की संख्या कम से कम रहे यह भाव भी प्रकट हो रहा है और इसी से राजा का कर्तव्य बताया है कि वे इनके पढ़ने की ऐसी व्यवस्था करे कि वे द्विज हो जायें। **शूद्र द्विजों में गिना जा सकता है, क्या सन्देह के लिए अब भी कोई स्थान है?**

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में महर्षि दयानन्द लिखते हैं- वर्णाश्रम व्यवस्था भी गुण कर्मों के आचार विभाग से होती है। इसमें मनुस्मृति का भी प्रमाण है कि- शूद्र ब्राह्मण और ब्राह्मण शूद्र हो जाता है अर्थात् गुण कर्मों के अनुरूप ब्राह्मण हो तो ब्राह्मण रहता है तथा जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के गुण वाला हो तो वह क्षत्रिय वैश्य और शूद्र हो जाता है। वैसे शूद्र भी मूर्ख (सर्वथा अयोग्य) हो तो वह शूद्र रहता है और जो उत्तम गुणयुक्त हो तो यथायोग्य ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य हो जाता है, वैसे ही क्षत्रिय और वैश्य के विषय में भी जान लेना।

तो यहाँ बिल्कुल स्पष्ट है, और यह भी समझ लेना चाहिए कि अगर जन्म से ही वर्ण निर्धारण का निश्चय होता या प्रावधान होता तो फिर उसी समय वर्ण भी जन्माधारित हो जाता। परन्तु ऐसा है नहीं। वर्ण निर्धारण के लिए जो व्यवस्था है उसके बारे में महर्षि दयानन्द ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के अधिकार अनाधिकार विषय में लिखते हैं- **इससे यह निश्चित जाना जाता है कि २५ में वर्ष वर्णों का अधिकार ठीक-ठीक होता है क्योंकि २५ वर्ष तक बुद्धि बढ़ती है इसलिए उसी समय गुण कर्मों की ठीक-ठीक परीक्षा करके वर्णाधिकार होना उचित है।**

पुनः एक बार स्पष्ट तौर से जन्मगत जाति और वर्ण में भेद समझ लें। आर्योद्देश्य रत्नमाला में महर्षि लिखते हैं- वर्ण- जो गुण कर्मों के योग से ग्रहण किया जाता है वह वर्ण शब्दार्थ से लिया जाता है।

जबकि जन्मना जाति में गुण-कर्म का कोई महत्त्व नहीं होता कुल और वंश ही मुख्य है और न ही ग्रहण करने की बात है, वह पहले से सुनिश्चित है।

स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में भी स्वामी जी लिखते हैं- **वर्णाश्रम गुण-कर्मों को योग्यता से मानता हूँ।**

फिर सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है- **रज-वीर्य के योग से ब्राह्मण शरीर नहीं होता।**

इतने स्पष्ट प्रावधान होते हुए भी अगर यह कहा जाए कि वर्ण धर्म ही जाति धर्म है तो यह विडम्बना ही है। हम फिर कहना चाहेंगे कि मध्यकाल में जाति व्यवस्था को रूढ़ करके जो अत्याचार और अमानवीय व्यवहार तथा कथित निम्न जातियों से किया गया वह अक्षम्य है और अगर आज भी उसके अवशेष कहीं मिलते हैं तो उनका समूल नष्ट करना सम्पूर्ण समाज का कर्तव्य है। परन्तु इसको हवा देकर के सम्पूर्ण सनातन धर्म को अपमानित करना और उसे समूल नष्ट करने की बात करना सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था को समाप्त कर देने जैसा है।

इस पर भी विचार करें कि योग्यता मूलक व्यवस्था सदैव प्राकृतिक न्याय के अनुरूप होती है। इसी योग्यता के आधार पर वर्ण परिवर्तन की भी व्यवस्था हो तो वह कैसे दोषपूर्ण और अन्यायकारी कही जावेगी? महर्षि दयानन्द ने तो वर्ण परिवर्तन के उदाहरण देते हुए सत्यार्थ प्रकाश में लिखा। जब पूछा गया कि- 'जिनके माता-पिता ब्राह्मण हों वही ब्राह्मण अथवा ब्राह्मणी होते हैं या फिर जिनके माता-पिता अन्य वर्ण के हों तो क्या

उनके सन्तान भी कभी ब्राह्मण हो सकते हैं? तो महर्षि दयानन्द उत्तर देते हुए लिखते हैं- **'हाँ! बिल्कुल बहुत से हो गए, होते हैं और होंगे भी।** वे छान्दोग्योपनिषद् का उदाहरण देते हुए लिखते हैं कि जावाल ऋषि तो अज्ञात कुल के थे फिर भी अपनी योग्यता के बल पर उन्होंने ऋषित्व प्राप्त किया। महाभारत में देखें तो विश्वामित्र क्षत्रिय वर्ण के थे और मातंग चांडाल वर्ण के थे परन्तु यह दोनों ही ब्राह्मण हो गए। क्यों? उनके कर्मों के आधार पर। अतः ऋषि लिखते हैं कि- **अब भी जो उत्तम विद्या स्वभाव वाला है वही ब्राह्मण के योग्य और मूर्ख शूद्र के योग्य होता है और वैसा ही आगे होगा।**

अब अन्त में वर्ण व्यवस्था के लाभ जो स्वामी दयानन्द ने लिखे हैं वह भी जान लीजिये और मनन कीजिए तथा जन्माधारित जाति व्यवस्था को दूर करने हेतु प्रयत्नशील हूजिये।

गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था वरण के लाभ

जिस-जिस पुरुष में जिस-जिस वर्ण के गुण, कर्म हों उस-उस वर्ण का अधिकार देना। ऐसी व्यवस्था रखने से सब मनुष्य उन्नतिशील होते हैं, क्योंकि उत्तम वर्णों को भय होगा कि जो हमारे सन्तान मूर्खत्वादि दोषयुक्त होंगे तो शूद्र हो जायेंगे और सन्तान भी डरते रहेंगे कि जो हम उक्त चाल-चलन और विद्यायुक्त न होंगे तो शूद्र होना पड़ेगा। और नीच (निम्न) वर्णों को उत्तम वर्णस्थ होने के लिये उत्साह बढ़ेगा। विद्या और धर्म के प्रचार का अधिकार ब्राह्मण को देना, क्योंकि वे पूर्ण विद्यावान् और धार्मिक होने से उस काम को यथायोग्य कर सकते हैं। क्षत्रियों को राज्य का अधिकार देने से कभी राज्य की हानि वा विघ्न नहीं होता। पशुपालनादि का अधिकार वैश्यों ही को होना योग्य है, क्योंकि वे इस काम को अच्छे प्रकार कर सकते हैं। शूद्र को सेवा का अधिकार इसलिये है कि वह विद्यारहित मूर्ख होने से विज्ञान सम्बन्धी काम कुछ भी नहीं कर सकता किन्तु शरीर के काम सब कर सकता है। इस प्रकार वर्णों को अपने-अपने अधिकार में प्रवृत्त करना राजा आदि सभ्यजनों का काम है। (सत्यार्थप्रकाश चतुर्थ समुल्लास)

यहाँ अवकाश नहीं है अतः केवल इतना लिख दें कि इस हेतु दयानन्द ने जो व्यवस्था दी है केवल वही कारगर है अन्य नहीं।उसकी चर्चा फिर कभी।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

□□□

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

पाठकों के पास 'सत्यार्थ सौरभ' डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण अनेक बार समय पर नहीं पहुँच पाती है। पाठक न्यास को ही दोषी मानते हैं, जिसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु वास्तविकता है कि यहाँ से प्रत्येक माह की 7 तारीख को पत्रिका प्रेषित कर दी जाती है। पश्चात् सब कुछ डाक विभाग की कृपा पर निर्भर करता है। फिर भी आपसे निवेदन है कि प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।
-सम्पादक

जन्म और मरण संसार की शाश्वत घटनाएँ हैं। यह कटु सत्य तथा ईश्वरीय नियम है कि जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है। शरीर से आत्मा (जीव) का निकल जाना मृत्यु है। जन्म से मरण तक का काल जीवन है, जिससे हम सब परिचित हैं।

परन्तु मृत्यु मानव के लिए एक चुनौती रही है। एक विचारणीय विषय या एक प्रश्न- **'मृत्यु के पश्चात् क्या'** ? यह प्रश्न मानव के लिए सदा से एक पहेली बना हुआ है। जिसका उत्तर प्राप्त करने की जिज्ञासा उसे चिरन्तन काल से रही है। राजकुमार सिद्धार्थ

(महात्मा बुद्ध), बालक मूलशंकर (महर्षि दयानन्द सरस्वती) के अपरिपक्व मनों को इन्हीं प्रश्नों ने विचलित किया था। कठोपनिषद् में बालक नचिकेता ने आचार्य यम से इन्हीं प्रश्नों का समाधान प्राप्त करना चाहा था। वेद में मृत्युसूक्त, कालसूक्त, प्राणसूक्त, ब्रह्मचर्यसूक्त, दीर्घायुसूक्त आदि सूक्तों में इस प्रकार के प्रश्नों को उठाया गया है तथा मानव के लिये विहित कर्तव्यों और जीवन दृष्टिकोण का संकेत किया गया है।

वेद में मृत्यु के पश्चात् जीव की दो गतियों का उल्लेख किया गया है- पुनर्जन्म और मोक्ष। इन गतियों को जीव मृत्यु उपरान्त अपने कर्मों के अनुसार ईश्वरीय व्यवस्था से प्राप्त करता है। अतएव सर्वप्रथम मृत्यु के तत्त्व को समझना होगा।

मृत्यु जीवन की अनिवार्यता है

मृत्यु जीवन की अनिवार्यता है। संसार की प्रत्येक उत्पन्न वस्तु चर-अचर, प्राणी-अप्राणी सभी जाने-अनजाने मृत्यु की ओर ही बढ़ रही हैं। जहाँ जन्म है वहाँ मृत्यु है; जहाँ निर्माण है, वहाँ विनाश है; जहाँ उत्पत्ति है, वहाँ प्रलय है। जन्म-मरण संसार की शाश्वत घटनाएँ हैं। मृत्यु प्रतिपल जीवन का पीछा कर रही है, परन्तु मानव मृत्यु की ओर निरन्तर बढ़ता हुआ भी प्रसन्न होता है। एक-एक जन्म दिवस पर कितनी-कितनी खुशियाँ मनाता है। मानव को विचार करना चाहिए कि हमारा जीवन क्या है? जैसे जल से भरा हुआ घड़ा प्रतिपल खाली होता जाता है, वैसे ही हमारा जीवन प्रतिक्षण मृत्यु की ओर बढ़ रहा है और हम इसे जान ही नहीं पाते हैं। वेद में कहा है-

पूर्णः कुम्भोऽधि काल आहितस्तं वै पश्यामो बहुधा नु सन्तः॥ - अथर्ववेद १९/५३/३

सन्त (बुद्धिमान् मनुष्य) भरे घड़े के समान काल के

स्वरूप का सदा अनुभव करते हैं।

काम करते-करते जब हमारा शरीर थक जाता है तो उसे आराम देने के लिए निद्रा आ जाती है। इससे शरीर की थकावट दूर हो जाती है और हमें नये सिरे से काम करने की शक्ति प्राप्त हो जाती है। निद्रा की अवस्था में शरीर के अन्दर बाहर के समस्त अंगों को विश्राम मिल जाता है, परन्तु प्राण तब भी कार्य करता रहता है, उसे विश्राम करने का अवसर नहीं मिलता। नई स्फूर्ति और शक्ति से कार्य करने के लिए उसे भी विश्राम की आवश्यकता है। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए परम दयालु परमेश्वर ने मृत्यु का विधान किया है। वृद्धावस्था में असह्य पीड़ा और कष्ट के कारण जब प्राणी त्राहि-त्राहि कर उठता है तब उससे मुक्ति दिलाने के लिए मृत्यु आती है। मरना तो नये जीवन का आरम्भ है। यह कटु सत्य है जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु भी अवश्य होगी। गीता में योगेश्वर श्री कृष्ण ने कहा है-

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि॥-गीता२/२५

जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है और जिसकी मृत्यु हुई है उसका जन्म निश्चित है।

शरीर की मृत्यु प्रतिक्षण होती रहती है। रसायन शास्त्र के अनुसार हमारा शरीर सृष्टि के पाँच भौतिक तत्त्वों से बना है। शरीर के परमाणु निरन्तर क्षीण होते रहते हैं और उनकी पूर्ति सृष्टि में व्याप्त परमाणुओं से होती रहती है। जब से शरीर का बनना प्रारम्भ हुआ, तब से शरीर का टूटना भी जारी है। शैशव से बालावस्था, बालावस्था से किशोरावस्था, किशोरावस्था से युवावस्था, युवावस्था से प्रौढ़ावस्था, प्रौढ़ावस्था से वृद्धावस्था इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। शरीर शास्त्रियों का कहना है कि शरीर के परमाणु या कोशिकाएँ प्रतिपल बदलती रहती हैं। सात वर्ष में पूरा का पूरा शरीर बदल कर दूसरा बन जाता है। इस प्रकार सत्तर वर्ष की आयु पार करते-करते दस बार शरीर-परिवर्तन हो जाता है। यह परिवर्तन इतना धीरे-धीरे और सूक्ष्म गति से होता है कि हमें इसका अनुभव ही नहीं होता। हमें इसका अनुभव तब होता है जब शरीर का यह परिवर्तन एक सीमा तक पहुँचकर रुक जाता है। पुराना सब टूट जाता है और नया बनना बन्द हो जाता है। इसी परिवर्तित शरीर (टूटे-फूटे शरीर) को अपने रहने के अयोग्य समझकर आत्मा ईश्वरीय व्यवस्था से वहाँ से प्रयाण कर जाता है, इसी को मृत्यु कहते हैं।

शरीर के अवस्थान्तरण की अन्तिम अवस्था मृत्यु है। गीता में योगेश्वर श्री कृष्ण ने कहा-

देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति॥- गीता २/१३

जैसे जीवात्मा की इस देह में बालकपन, जवानी और वृद्धावस्था होती है, वैसे ही अन्य शरीर की प्राप्ति होती है, उस विषय में धीर पुरुष मोहित नहीं होता।

इस वास्तविकता को स्वीकार कर हम परमपिता के इस शाश्वत विधान को हृदय से स्वीकार करें तथा इस विषम परिस्थिति में धैर्य और शान्ति को धारण करें, इसी में मानव का कल्याण है।

मृत्यु सर्वनाश नहीं, रूपान्तरण है

मृत्यु का एक अन्य पक्ष भी है। वैदिक जीवन दर्शन कहता है- मृत्यु का अस्तित्व ही नहीं है। शरीर तथा आत्मा दोनों पृथक्-पृथक् तत्त्व हैं। शरीर आत्मा नहीं है, आत्मा नित्य तथा शाश्वत है। शरीर की मृत्यु होती है, यह लोकाचार की बात है। शरीर भी नहीं मरता, उसका नाश नहीं होता अपितु उसका रूपान्तरण होता है। जैसे तेल, बाती, वायु और अग्नि के संयोग से दीपक जलता है। जब तेल और बाती नहीं रहते तो दीपक बुझ जाता है अर्थात् उसकी मृत्यु हो जाती है। परन्तु ये समझना कि तेल और बाती का नाश हो गया, भूल होगी। वस्तुतः उनका रूपान्तरण हुआ है। जिन परमाणुओं से उनका निर्माण हुआ था, रूपान्तरित होकर वे उन्हीं में विलीन हो गये।

गीता में योगेश्वर श्री कृष्ण ने कहा है-

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।

उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभि:।।

- गीता -२/१६

जो वस्तु विद्यमान नहीं है वह कभी हो नहीं सकती और जो वस्तु विद्यमान है वह कभी नष्ट नहीं होती। तत्त्वज्ञानी पुरुष इस सत् और असत् के रहस्य को भली भाँति जानते हैं।

विज्ञान का पदार्थ व ऊर्जा संरक्षण नियम कहता है कि- पदार्थ एवं ऊर्जा कभी नष्ट नहीं होते, दोनों का रूपान्तरण होता है। प्रकृति तथा आत्मा दोनों सत् हैं। दोनों की पृथक्-पृथक् सत्ता है। शरीर प्रकृति के पाँच भौतिक तत्त्वों- पृथ्वी, जल, वायु, आकाश और अग्नि से बना है। शरीर की मृत्यु हो जाने- समाधि, जलप्रवाह, दफनाने, दाहकर्म आदि पर पुनः अपने उन्हीं मूल तत्त्वों में मिल जाता है। अतः न शरीर मरता है, न आत्मा। नष्ट कुछ नहीं होता है। दोनों का रूपान्तरण हो जाता है। **शरीर के रूपान्तरण का नाम मृत्यु और आत्मा के रूपान्तरण का नाम**

पुनर्जन्म है। गीता भी यही कहती है कि जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्र उतार कर नए वस्त्र धारण कर लेता है, इसी प्रकार आत्मा भी पुराने शरीर को त्याग कर नया शरीर धारण कर लेती है।

ऋषि वसिष्ठ ने मृत्यु के इसी स्वरूप को दर्शाया है-

मरणं सर्वनाशात्म न कदाचन विद्यते।

- योगवसिष्ठ ६/२/१८/१

मृतो नष्ट इति प्रोक्तो मन्ये तच्च मृषा ह्यसत्।

स देशकालान्तरितो भूत्वा भूत्वानुभूयते।।

- योगवसिष्ठ ५/७६/६४-६५

हे राघव! मौत से कभी सर्वनाश नहीं होता मरा हुआ प्राणी नष्ट हो गया- ऐसा कहना सर्वथा असत्य है। मरने पर तो यह जीव दूसरे देश और काल में दूसरी सृष्टि का अनुभव करने लगता है।

मृत्यु का काल और स्थान अनिश्चित है

आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान ने आशातीत उन्नति की है परन्तु वह यह नहीं जान पाया कि मृत्यु किस क्षण आयेगी। मृत्यु को काल भी कहा गया है क्योंकि वह किसी भी समय बिना बुलाये आ जाती है। मृत्यु जितनी सत्य सुनिश्चित और अवश्यम्भावी है, मृत्यु का काल तथा स्थान उतना ही अज्ञात और अनिश्चित् है।

महाभारत में मृत्यु काल की विचित्रता के सम्बन्ध में निर्देश किया गया है-

को हिजानाति कस्याद्य मृत्युकालो भविष्यति।
युवैव धर्मशील: स्यादनित्यं खलु जीवितम्।।

- महाभारत, शान्तिपर्व, श्लोक१६

हे युधिष्ठर! किसी को कुछ नहीं मालूम कि कब किसका कहाँ मृत्यु-समय आ पहुँचेगा, अतः इस सत्य को समझकर **युवावस्था में ही धर्माचरण करो, इस जीवन का कोई भरोसा नहीं है।**

परन्तु मनुष्य इस शाश्वत सत्य को समझना ही नहीं चाहता है। मृत्यु बार-बार उसे संकेत करती है, समझाती है फिर भी वह अनजान ही बना रहता है। वह विचारता ही नहीं कि जो मृत्युरूपी विपत्ति आज मेरे पड़ौसी पर या मित्र पर आई है वह कल उस पर भी आने वाली है? प्रतिदिन हम देख रहे हैं मृत्यु विभिन्न रूपों में आ रही है- कभी बाढ़, कभी भूकम्प, कभी दुर्घटना, कभी महामारी, कभी हत्या तो कभी आत्महत्या। मनुष्य कितना ही अनजान या बेखबर बना रहे समय आने पर उसके न चाहने पर भी मृत्यु उसे अवश्य लेकर जायेगी। **क्रमशः .....**

लेखिका- (स्मृतिशेष) सत्यार्थदूत श्रीमती सरोज आर्या
साभार- मृत्योर्माऽमृतं गमय

□□□

महर्षि दयानन्द की २००वीं जयन्ती पर महर्षि दयानन्द के दो सौ उपकार

गतांक से आगे ....

- सब जीवों को जीने का अधिकार बताया।
- गौ रक्षा का महत्व बताया।
- गौ करुणानिधि बनाई।
- सर्वप्रथम रेवाड़ी में गौशाला स्थापित कराई।
- गौ रक्षा के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाया।
- गौ रक्षा के लिए महारानी विक्टोरिया को पत्र लिखा।
- गौ से कृषि और कृषि से भारत का उत्थान बताया।
- पराधीन भारत में कल कारखाने खोलने की बात कही।
- उद्योग लगाने के लिए सर्वप्रथम प्रयास किया।
- स्वदेशी को सर्वोपरि बताया।
- स्वदेशी वस्तुओं का महत्व बताया।
- भारतीय सभ्यता के स्वाभिमान को जगाया।
- उँगलियों की बत्ती बनाकर जलाने पर भी सत्य कहने की बात कही।
- बालकों की शिक्षा मौलवी पादरियों से कराने का निषेध किया।
- सर्वमत की एकता के लिए प्रयास किया।
- सबको दुराग्रह छोड़कर एक साथ लाने के लिए बल दिया।
- सर्वधर्म सम्मेलन बुलवाया।
- श्राद्ध तर्पण कर्म जीवित अवस्था में करना चाहिए यह बताया।
- मरने के बाद माता-पिता को कुछ नहीं दिया जा सकता यह बताया।
- यज्ञोपवीत संस्कार पुनः प्रचलित किया।
- शूद्रों और स्त्रियों को यज्ञोपवीत धारण का अधिकारी बताया।
- भागवत का खण्डन किया।
- अठारह पुराणों को वेद विरुद्ध बताया।
- अवतारवाद पूजा को हानिकारक बताया।
- सत्य के प्रचार के लिए पादरियों मौलवियों से सैकड़ों बार शास्त्रार्थ किया।
- काशी में सबसे बड़ा शास्त्रार्थ करके मूर्ति पूजा

को वेद विरुद्ध बताया।

- ☞ वेद पाठशाला की स्थापना की।
- ☞ गुरुकुल प्रणाली का मार्ग प्रशस्त किया।
- ☞ मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताया।
- ☞ मोक्ष की अवधि बताई।
- ☞ ईश्वर के प्रमुख १०० नाम बताये।
- ☞ ईश्वर और जीव का भेद बताया।
- ☞ नमस्ते को आर्यों का अभिवादन बताया।
- ☞ स्वर्ग और नरक की वास्तविक परिभाषा बताई।
- ☞ स्वराज्य का सबसे पहले उद्‌घोष किया।
- ☞ १८५७ की क्रान्ति में भूमिका निभाई।
- ☞ स्वराज को ही सुराज बताया।
- ☞ पराधीन देश में लोकतंत्र की बात कही।
- ☞ नमक कर का सर्वप्रथम विरोध किया।
- ☞ विदेशी राजा हमारे देश में कभी ना हो यह स्वाभिमान के साथ कहा
- ☞ जंगली वस्तुओं पर चुंगी कर का विरोध किया।
- ☞ स्टाम्प पेपर का विरोध किया।

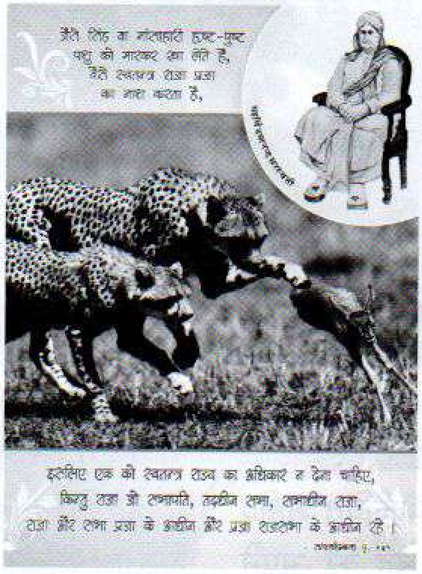

- ☞ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए वकालत की।
- ☞ राजनीति पर गहन प्रकाश डाला।
- ☞ राजाओं के लिए भी लोकतंत्र की बात कही।
- ☞ धर्म और राजनीति का सुन्दर समन्वय बताया।
- ☞ सत्यार्थ प्रकाश जैसे अद्‌भुत ग्रन्थ की रचना की।
- ☞ प्रथम क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा को इंग्लैण्ड भेजा।
- ☞ जीवन में १७ बार घोर विष का पान किया।
- ☞ प्रचार करते हुये पत्थर खाये उनपर साँप तक फेंका गया। क्रमशः .....

ऋषि चरणानुरागी
-आचार्य राहुलदेवः

□□□

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

अपने जीवन के लगभग ६७ वर्ष की आयु में पहली बार नवलखा महल, गुलाब पार्क, उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश न्यास के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हो गया, एक छूटा हुआ दर्शनीय स्थान देखकर जीवन की धन्यता का अनुभव हो रहा है। न्यास के अध्यक्ष माननीय अशोक आर्य जी के श्री मुख से न्यास के प्रकल्पों को जानकर बहुत प्रेरणा प्राप्त हुई। इनके चिरायुष्य के लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

- डॉ. नरेश बत्रा, अंबाला छावनी

आज दीपावली उत्सव के शुभारम्भ पर नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर में चित्रदीर्घा के अवलोकन का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। श्रीमती शारदा गुप्ता के आग्रह पर यह मौका मिला। महर्षि दयानन्द के जीवन दर्शन के साथ ही भारतीय संस्कृति को प्रदर्शित करती झाँकी देखी गई। प्रन्यास द्वारा किया गया उक्त कार्य व स्थापित सांस्कृतिक केन्द्र वस्तुतः एक अनुपम व सराहनीय प्रयास है। लोक प्रन्यास को इस कार्य हेतु साधुवाद। श्री अशोक आर्य, अध्यक्ष द्वारा प्रन्यास पंजीयन की कार्यवाही शीघ्र करना बताया। भारतीय संस्कृति, संस्कार व मूल देशभक्ति के भावों को प्रसारित किए जाने हेतु लोकन्यास कृत संकल्प होना बताया, जो वस्तुतः अनुकरणीय है।

- प्रज्ञा केवलरमानी; आयुक्त देवस्थान विभाग, उदयपुर, राजस्थान

आज इस नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र में आकर बहुत ही गौरवान्वित महसूस हो रहा है। १६ संस्कारों का अद्‌भुत चित्रण देखकर, भारतीय दर्शन को समझना बहुत अच्छा लगा। संस्थान के अध्यक्ष एवं उनकी टीम को बहुत-बहुत बधाई और साधुवाद और संस्थान की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करते हैं।

- आनन्द पगारिया; CA उदयपुर

जीवित शहीद मथुरवा

मेरे चरित्र नायक आर्य समाज नेमदारगंज के संस्थापक सदस्यों में से एक, भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के उपाख्य 'नमस्ते जी' एक जीवित शहीद थे। उनका काम डेटोनेटर विस्फोटक छड़ को अपने साढ़ू जो चिरैला जंगल में पहाड़ तोड़ने वाले अधिकारी थे उनसे लाकर १०,२० की संख्या में इन्हें रात्रि में ले जाकर, पैदल रजौली से चिरैला सुबह ४ बजे पुनः पैदल रजौली आकर बस आदि साधनों से गन्नों के टुकड़ों के साथ बाँधकर लाकर गरीब मजदूर के भेष में स्वतंत्रता सेनानी होम्योपैथिक डॉक्टर उमेश चन्द्र जी को देते थे। पुनः डॉक्टर साहब शुद्ध खादी वस्त्र पहनकर पाँव में रंगोली लगाकर दूल्हे के वेश में मथुरवा मजदूर के साथ अटैची में भरकर विस्फोटक छड़ों को रेल से गया जाकर वैद्य बागेश्वर मिश्र स्वतंत्रता सेनानी के घर पहुँचाते थे।

जीवन में कई बार उन्होंने यह खतरनाक खेल अंजाम में लाकर देश की सेवा की। दैववशात् बागेश्वर मिश्रा जी को नेमदारगंज आना पड़ा। अपने घर पर उनको ठहराए। तब डॉक्टर उमेश चन्द्र जी ने चुपके से कहा कि मिश्रा जी के पास पिस्तौल रहता है दिखलाने का आग्रह कीजिएगा। रात्रि में विश्राम के समय हमारे चरित्र नायक ने उनसे पिस्टल दिखलाने का आग्रह किया। मिश्रा जी ने कमरे को बन्द कर कमर से पिस्तौल निकाल कर दिखाया। कैसे खुलता है? कैसे चैम्बर में गोली भरी जाती है, दिखलाए एवं समझा दिया और पूछा देख समझ लिए अब जरूरत पड़ेगी तो प्रयोग कर सकेंगे। मथुरा जी ने कहा- 'जी'। इतने में ही मिश्रा जी का रुख बदल गया और लोडेड पिस्तौल तानते हुए पूछ लिया कि किसी से कहोगे तो नहीं। मथुरा जी सन्न रह गए और घिग्गी बंध गई। बोले- 'नहीं'। तब हँसते हुए मिश्रा जी ने कहा कि- 'यदि हाँ कह देते तो अभी तुरन्त सूट कर देते। हम लोगों का जीवन काँटे पर चलने का है।'

इन्दिरा जी के प्रधानमंत्री काल में जब स्वतंत्रता सेनानियों को ताम्रपत्र प्रमाण स्वरूप प्राप्त हो रहा था तो डॉक्टर उमेश चन्द्र जी ने उनके नाम को प्रस्तावित करने का प्रस्ताव रखा। परन्तु हमारे चरित्र नायक ने अस्वीकार कर दिया। तब डॉक्टर साहब ने कहा कि जानते हो एक बार भी छड़ के साथ पकड़ा जाते तो गोराशाही सीधे सूट कर देता। इतना रिस्क उठाने के बाद भी इनकार करते हैं। आप तो गुपचुप शहीद हैं। इन्होंने ही गाँव में हर लोगों, ग्राहकों से 'नमस्ते' करने का उद्यम प्रचलित किया।

हर दीपावली में अपनी दुकान में पौराणिक पूजा के स्थान पर हवन करने की परम्परा का श्री गणेश किया। कई मुस्लिम बच्चों को गायत्री मंत्र रटवाया। अपनी दुकान में गायत्री मंत्र लिखा करते थे जिस पर पौराणिक पण्डे गुस्सा होते थे।

- सत्यदेव प्रसाद आर्य मरूत (पुत्र)
आर्य समाज मन्दिर नेमदारगंज (नवादा-बिहार)
पिन-805121

□□□

फीकी न पड़ने वाली मिठास

सात अक्तूबर २०२३ को सुबह-सुबह अमृतसर के एक होटल से तैयार होकर बाहर आया और ऑटो का इंतजार करने लगा। तभी एक ऑटो पास आकर रुका। मैंने पूछा कि पिंगलवाड़ा चलोगे। हाँ जी चलेंगे। मानाँवाला में जो पिंगलवाड़ा है वहाँ जाना है। कितने पैसे लोगे? जी जो मर्जी दे देना। फिर भी बता दो तो ठीक रहेगा। डेढ़ सौ दे देना जी। एकदम वाजिब पैसे माँगे थे अतः मोल-भाव का प्रश्न ही नहीं उठा। ऑटो में बैठने के फौरन बाद बातों का सिलसिला शुरू हो गया। मैंने कहा, "सरदार जी रास्तें में कहीं चाय पिलवा दोगे अच्छी सी?" हाँ जी जरूर पिलवा देंगे। कुछ देर बाद उन्होंने सड़क के किनारे चाय के एक ठेले पर ऑटो रोक दिया और चायवाले से कहा, " भाई एक चाय देना अच्छी सी बना के।" मैंने कहा "एक क्यों? दोनों पीएँगे ना।" सरदार जी ने कहा, "जी मैं भी पी लूँगा पर पैसे मैं दूँगा चाय के।" मैंने कहा कि ऐसा मत करो सरदार जी। पैसे मुझे देने दो लेकिन सरदार जी नहीं माने। "ठीक है सरदार जी, फिर ब्रेड पकौड़ा भी खिलवा दो," वहाँ ताजा ब्रेड पकौड़े बनते देख मेरे मुँह में पानी आ गया। सरदार जी ने कहा कि ब्रेड पकौड़ा भी खाओ। जी आधा-आधा खाएँगे। जी जैसी तुहाडी मर्जी। हम दोनों ने आधा-आधा ब्रेड पकौड़ा खाया, चाय पीई और चल पड़े। पिंगलवाड़ा पहुँचने पर पाया कि नया हाईवे निर्माणाधीन होने के कारण रास्ता कुछ परिवर्तित था। दो किलोमीटर आगे जाकर ही लौटने के लिए कट मिला। गन्तव्य पर पहुँचने के बाद मैंने पूछा, सरदार जी कितने पैसे दूँ?" जी डेढ़ सौ रुपए। मैंने उन्हें दो सौ रुपए देने चाहे तो उन्होंने कहा, "जी मैं डेढ़ सौ ही लूँगा। मैंने पहले ही कह दिया था कि चाय के पैसे मैं दूँगा।" मैंने कहा कि चाय तो आपने ही पिलाई है और ब्रेड पकौड़ा भी आपने ही खिलाया है। मैं उनके पैसे नहीं दे रहा हूँ लेकिन जो ज्यादा चलना पड़ा है उसके पैसे तो बनते हैं न? बड़ी मुश्किल से उन्होंने अतिरिक्त पैसे स्वीकार किए। "वाहे गुरू जी दी किरपा रही तो फिर मिलांगे," ये कहकर उन्होंने हाथ जोड़कर विदा ली। अगले दिन वापसी में उनसे फिर मुलाकात हो सकती थी लेकिन उनका फोन नम्बर लेने का ध्यान ही नहीं रहा। खैर, ये मुलाकात भी कभी नहीं भूल पाएगी। और उस चाय की मिठास के फीका पड़ने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

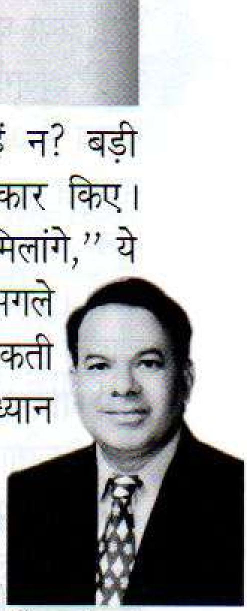

- सीताराम गुप्ता
ए. डी. १०६-सी., पीतमपुरा
दिल्ली - ११००३४

□□□

बुजुर्ग क्यों रह जाते हैं अकेले?

बागवां अपनी ही बगिया से हुआ क्यूँ बेगाना,
क्यूँ ढूँढ़ना पड़ रहा, उन्हें कोई दूसरा आशियाना ?

आजकल हम जहाँ कहीं भी किसी भी वृद्ध से मिलें, उनके विचार जानें, तो बस एक ही विषय पर अपनी शिकायत करते हुए दिखते हैं कि आजकल के बच्चे कहाँ अपने माँ-बाप का ध्यान रखते हैं। न ही उनका सम्मान, सुरक्षा, देखभाल, सेवा आदि करते हैं। कहते हैं कि एक माता-पिता पाँच बच्चों को पाल सकते हैं, परन्तु पाँच बच्चे मिलकर भी एक माँ-बाप का खर्चा नहीं उठा सकते या ख्याल नहीं रख सकते।

तब मैंने अपनी जिन्दगी के अनुभव व कुछ लोगों से की गयी बातचीत के आधार पर चिन्तन-मनन किया कि ऐसा क्या घट रहा है, जिसके कारण हमारे बुजुर्ग अपने जीवन के अन्तिम पड़ाव में असुरक्षित, असहाय और अकेला महसूस कर रहे हैं।

आ अंगुली थाम के तेरी,
तुझे मैं चलना सिखलाऊँ।
तू हाथ पकड़ना मेरा,
जब मैं बूढ़ा हो जाऊँ।।

कुछ कारण और कुछ निवारण मेरे मस्तिष्क में उभरे। उन्हें मैं आज आपके साथ मिलकर बाँटना चाहती हूँ।

गर्भ धारण

आधुनिकता की अंधी दौड़ में आज के माता-पिता शारीरिक थकान में व आपस में लड़ते-झगड़ते हुये नशे की हालत में या यूँ कहिये कि मद्यपान के पश्चात् गर्भधारण करते हैं, तो हम संस्कारी, सदाचारी, सेवाभावी सन्तान होने की आशा कैसे कर सकते हैं? गर्भधारण के समय भी हम अपने कुविचारों पर नियंत्रण नहीं रख पाते, जिसका सीधा असर गर्भस्थ शिशु के मानस पटल पर पड़ता है। गर्भावस्था में अपने आचार-विचार, संस्कार एवं अपने व्यवहार पर विशेष ध्यान न देना भी एक मूल कारण है।

जन्म के पश्चात् संस्कारों का अभाव

एक बच्चे का मन, दिमाग कोरे कागज के समान होता है, जो अपने पूरे जीवन के समस्त मूल ज्ञान को अपने घर-परिवार, आस-पास, विशेषतः अपने माँ-बाप के क्रिया-कलापों द्वारा ही सीखता है और उन्हीं क्रिया-कलापों का अनुसरण भी करता है, जो उसके जीवन के चरित्र की नींव का कार्य करते हैं, परन्तु आजकल पाश्चात्य संस्कृति व मॉडर्न दिखने की चाह ने सब संस्कारों पर पानी फेर दिया है और जब बड़े ही अपने बड़ों का आदर-सत्कार नहीं करेंगे, तो हम बच्चों से कैसे आशा रख सकते हैं? आज के युग में एकल परिवार बच्चों को कैसे सिखा पायेंगे कि बड़ों से कैसे अनुभव को साझा किया जाता है? उन्हें तो स्वयं का निर्णय ही सर्वोपरि लगने लगता है।

शिक्षा

आज जब अपने बच्चों को शिक्षा देने की बारी आती है, तो हम अपने बच्चों को डॉक्टर-इंजीनियर बनाने पर तो चर्चा करते हैं शुरू से कॉन्वेंट कॉलेज की गुणवत्ता पर ध्यान देने लगते हैं। परन्तु क्या किसी ने

नैतिक शिक्षा की गुणवत्ता, संस्कारों, ज्ञान पर ध्यान देने की चेष्टा या चर्चायें की कि हमें कहाँ अपने देश के हित हेतु संस्कारों के बचाव, धर्म के आचरण, वेदों की सुरक्षा हेतु क्या करना चाहिए? इन सब पर ध्यान देने से हम बैकवर्ड जो बन जाते हैं। शुरू से ही विलासी जीवन जीने के लिये प्रयास आरम्भ हो जाते हैं। कभी यह भी ध्यान नहीं करते कि हमारे घर में धन अमानवीय तरीकों से तो नहीं आ रहा ।

हास्यास्पद तो यह है कि इन सब पर जो ध्यान भी देता है, तो उसे हम पिछड़े की संज्ञा देकर मखौल बना देते हैं। परन्तु यह नहीं समझ पाते कि हम जो देते हैं, वही पाते हैं। यहाँ तक कि यदि कोई युवा आज जब नौकरी तलाश करता है, तो फिर सैलरी के डिजिट को तो नोट करता है, न कि उस कम्पनी में होने वाली आय के स्रोत को।

निवारण

वृद्धावस्था जीवन का सर्वाधिक कठिन समय होता है। इस समय मनुष्य की शारीरिक क्षमतायें कम और जरूरतें पहले से अधिक हो जाती हैं। अतः व्यक्ति को चाहिए कि घर-परिवार की जिम्मेदारियों के भार को धीरे-धीरे अपने उत्तराधिकारियों को सौंपते हुए, उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने के लिये छोड़ दें। उनके प्रत्येक कार्य में आवश्यकता से अधिक दखलअन्दाजी न करते हुए सांसारिक क्रियाकलापों से स्वयं को धीरे-धीरे मुक्त करते रहें।

अकसर देखा गया है कि कुछ परिवारों में बड़े बुजुर्गों द्वारा प्रत्येक कार्य में हस्तक्षेप करना, तानाशाहों की भाँति व्यवहार करना, परिजनों की बुराइयाँ करना, अपने जवानी के दिनों की डींगे हाँकना, वर्चस्व की लड़ाई लड़ना, सन्तान को अयोग्य समझना, यहाँ तक

कि वे सन्तान को नासमझ समझकर प्रत्येक जिम्मेदारी को स्वयं अपने ही हाथों में रखते हैं और स्वयं की परेशानी का कारण बनते हैं।

आवश्यक खर्चों को छोड़कर धनसंचय से बचना चाहिये। इन सबसे हटकर, युवा साथियों को भी चाहिये कि बड़े-बुजुर्गों के तमाम दोषों, डांट-फटकार को समझते हुये, उनकी अच्छाइयों को ग्रहण करते हुये उनकी सेवा को अपना कर्म-धर्म मानें। उनके अनुभवों से कुछ सीखते हुये अपने जीवन का निर्वाह करें, जिससे आपको आशीर्वाद रूपी खजाना अवश्य प्राप्त होगा, क्योंकि आगे की पीढ़ी जैसा आपको करते देखेगी, वैसा ही आपके साथ करेगी। वो कहते हैं न "मान दोगे तो सम्मान मिलेगा, ज्ञान दोगे तो विज्ञान मिलेगा।"

लेखिका- प्रतिभा जिन्दल
अध्यक्ष-वैचारिक जागरण मिशन ट्रस्ट, आगरा

□□□

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु.51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

सामान्य विवेक पर आधारित अनेकान्त द्वारा तनावों में कमी

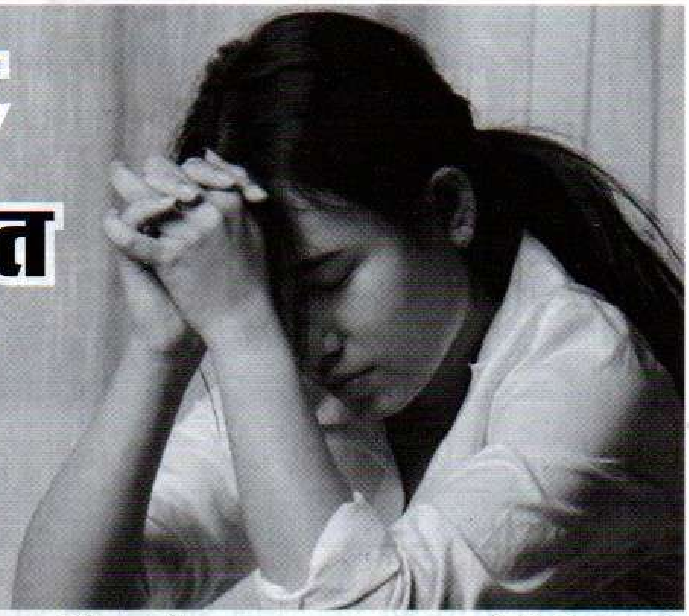

हमारी भावनाएँ एवं अनेकान्त

बहुधा निम्नांकित प्रकार के कथन हम बोलते हैं एवं सुनते हैं-

१. मुझे तुम गुस्सा मत दिलाओ।

२. आज सुबह से ही पापा की फटकार ने मुझे व्यथित कर दिया है।

३. आपने जो शब्द मुझे कहे उनसे मेरे दिल को बहुत ठेस पहुँची।

४. उसकी उपस्थिति मात्र ही मुझे दुःखी एवं क्रोधित कर देती है।

५. बड़ा मायूस मौसम है।

कई वाक्य उक्त प्रकार के हम बोलते हैं एवं सुनते हैं। यदि हम बोले एवं सुनने के साथ ऐसा मानते भी हैं तो यह एकान्तवादी दृष्टिकोण ही शान्ति, स्वास्थ्य, प्रसन्नता एवं समता को कई रुपों में प्रभावित करेगा। इन सारे कथनों में यह एकान्त मान्यता गर्भित है कि अपनी भावनाएँ एवं अपने सुख-दुःख दूसरे पदार्थों एवं व्यक्तियों के हाथ में हैं। हम बचपन से ही उपर्युक्त प्रकार के वाक्य सुनते आये हैं जिनसे हमारे संस्कार ही ऐसे बन गये हैं कि हम हमारी भावनाओं एवं हमारे सुख-दुःख वा जिम्मेदारी अपने ऊपर नहीं लेकर दूसरों पर थोपना चाहते हैं। हमारे मकान के दरवाजे पर कॉल बेल लगी है। बाहर का कोई भी व्यक्ति उसका बटन यदि दबा दे तो हमारे कमरे की घण्टी बज जाती है। परन्तु हमारे मकान के आर्किटेक्ट ने यह व्यवस्था भी बनाई है कि हमारे कमरे के अन्दर भी एक स्विच ऐसा लगाया जिसे यदि ऑफ कर दें तो बाहर का बटन कितना ही कोई दबाये हमारे कमरे की घण्टी नहीं बज सकती है। ऐसा ही अन्दर का स्विच क्या हमारे जीवन में नहीं बन सकता है? यह तभी सम्भव है जब 'अपनी भावनाएँ, अपने सुख-दुःख दूसरे पदार्थों एवं व्यक्तियों के हाथ में हैं? ऐसी एकान्त मान्यता को पहले दूर करें। इस एकान्त को हमें अनेकान्त में बदलना होगा। उक्त एकान्त कथन किसी अपेक्षा से माना जा सकता है' किन्तु साथ ही यह भी स्वीकारना होगा कि मेरी भावनाओं एवं मेरे सुख-दुःख का नियंत्रक मैं हूँ। **यदि मैं अप्रसन्न होने के लिए मना कर दूँ तो बाहरी पदार्थ या अन्य व्यक्ति मुझे अप्रसन्न होने या क्रोध करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते हैं?**

दूसरे व्यक्ति या पदार्थ हमारी भावनाओं को नियंत्रित करते हुए जब भी जहाँ भी दिखाई देते हैं वहाँ विश्लेषण करने पर हम पायेंगे कि हमने ही उन्हें हमें नियंत्रित करने का अधिकार दिया है। जब हम हमारे द्वारा दिये गये अधिकार को नहीं पहचानते तब यह दिखाई देता है कि दूसरे हमें क्रोध आदि दिलाते हैं या नियंत्रित करते हैं।

इस प्रकार जब भी हम यह मानें या कहें कि दूसरे व्यक्ति या पदार्थ मुझे सुखी-दुःखी कर सकते हैं, प्रसन्न कर सकते हैं या क्रोधित कर सकते हैं तब इसे

एकान्त कथन मानते हुए पहले इस कथन की अपेक्षा ढूढ़ते हुए इस रूप में समझें कि यदि हम दूसरे व्यक्तियों एवं पदार्थों को हमें नियंत्रित करने का हमारे द्वारा ही दिया गया अधिकार न पहचानें तो हमें ऐसा लगेगा कि दूसरे व्यक्ति या पदार्थ हमें नियंत्रित करते हैं।

इसके विपरीत यदि हम यह पहचान लें कि हम सुख-दुःख आदि हमारे स्वयं के विचारों के आधार पर ही अनुभव करते हैं व हमारे विचारों के नियंत्रक हम ही हैं तब इस अपेक्षा से हम यह कह सकेंगे कि हमारी भावनाओं के नियंत्रक हम स्वयं हैं।

दूसरों को अधिकार देने या न देने का अर्थ दूसरों का नियंत्रित करने का नहीं है। ऐसा नहीं है कि कोई हमें हमारी आज्ञा से गाली देता है या आज्ञा न हो तो गाली नहीं देता है। गाली न देने या देने की दूसरे व्यक्ति की स्वतंत्रता उस दूसरे व्यक्ति के पास है। यदि हम हमारे विचारों में दूसरे व्यक्ति को बहुत महत्त्व देते हैं या किसी रूप में उससे डरते हैं तो वह गाली हमें क्रोधित कर सकती है। अर्थात् दूसरे की गाली हमें क्रोधित करे या न करे यह हमारे हाथ में है। इस दृष्टि से यह भी कहा जा सकता है कि गाली में कोई शक्ति नहीं थी किन्तु हमारे द्वारा दी गई शक्ति से ही दूसरे की गाली हमें क्रोधित बना सकती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गाली को हमें क्रोधित करने का अधिकार हमसे ही मिला।

दुःख के कारण आते ही दुःखी हो जाना व फिर प्रसन्न होने के लिए किसी सुख के कारण की प्रतीक्षा करना अधिकांश व्यक्तियों की आदत बन चुकी है। अनेकान्त समझने का तत्काल लाभ यह लिया जा सकता है कि प्रसन्न होने के लिये प्रसन्नता के कारणों की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। यह प्रयोग सरलता से किया जा सकता है कि प्रसन्नता दायक कारणों की प्रतीक्षा किये बिना ही प्रसन्नता दायक विचारों द्वारा प्रसन्नता अनुभव की जा सकती है।

हमारी भावनाओं एवं सुख-दुःख का नियंत्रक कौन ?

एकान्त- मुझे अन्य व्यक्ति क्रोधित करते हैं। मेरा सुख-दुःख दूसरे पदार्थों एवं अन्य व्यक्तियों के हाथ में है।

अनेकान्त- किसी अपेक्षा से यह कहा जा सकता है कि मुझे अन्य व्यक्ति क्रोधित करते हैं या अन्य व्यक्ति एवं पदार्थ मेरे सुख-दुःख को प्रभावित करते हैं। किन्तु महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि मेरी भावनाओं एवं सुख-दुःख का नियंत्रक मैं हूँ। यदि मैं अप्रसन्न होने के लिए मना कर दूँ तो बाहरी पदार्थ या अन्य व्यक्ति मुझे अप्रसन्न होने या क्रोधित होने के लिए मजबूर नहीं कर सकते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाये तो विज्ञान भी यही कहेगा कि दूसरे व्यक्ति के कर्कश शब्दों में ऐसा कोई रसायन नहीं होता है जिससे हमें क्रोध पैदा हो ही। हमारे मस्तिष्क में उपस्थित रसायन हमारे क्रोध को प्रभावित कर सकते हैं किन्तु ये रसायन भी हमारे शरीर की ग्रन्थियों (glands) के रखरखाव पर निर्भर करते हैं। चूँकि इन ग्रन्थियों का स्राव हमारी विचाराधारा एवं चिन्तन पर बहुत कुछ निर्भर करता है अतः कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि हमारी प्रसन्नता, क्रोध आदि से सम्बन्धित मनोदशाओं के मुख्य नियंत्रक हम हैं। हमारी मनोदशा पर दूसरों का नियंत्रण भी जहाँ दिखाई देता है वहाँ उसका मुख्य कारण यह है कि हमने ही उन्हें नियंत्रित करने का अधिकार जाने-अनजाने में दिया है। **दूसरों को यह अधिकार हमने दिया है तो यह अधिकार वापस लिया भी जा सकता है।**

अमरीका के डॉ. वेन डायर उनकी विश्व प्रसिद्ध पुस्तक, 'Your Erroneous Zones' में लिखते हैं- "You and only you control your thinking apparatus (other then under extreme kind of brain washing or conditioning experimentation settings which are not a part of your life.) Your thoughts are your own, uniquely yours to keep, change, share or contemplate. No one else can get

inside your head and have your own thoughts as you experience them. You do indeed control your thoughts, and your brain is your own to use as you so determine."

डॉ. वेन डायर के इस कथन का भावार्थ यह है कि आप और केवल आप आपके मस्तिष्क के नियंत्रक हैं। आपके सिर में कोई दूसरा प्रवेश नहीं कर सकता है। आपके मस्तिष्क का उपयोग आप जैसा चाहें वैसा

कर सकते हैं।

एक निरक्षर समाज का व्यक्ति यह मानता है कि वह पढ़-लिख नहीं सकता है। कहीं से कोई नोटिस मिला है या नोटिस का उत्तर देना है तो वह किसी पढ़े-लिखे व्यक्ति के पास जाता है। कभी कोई व्यक्ति उसे पढ़ने की प्रेरणा देता है तो हँस कर टाल देता है या यह कह देता है कि 'पढ़ना-लिखना उसके लिए सम्भव नहीं है, यदि सम्भव होता तो अब तक उसके परिवार के लोग या पास-पड़ोसी क्यों अनपढ़ रहते?' कभी कोई बहुत प्रेरणा देता है तो कुछ समय निकालकर एक-दो अक्षर सीख भी लेता है किन्तु विश्वास में कमी होने के कारण आलस्य आ जाता है व थोड़े ही दिनों में जो कुछ सीखा है वह भी भूल जाता है। नतीजा यह होता है कि उसकी यह मान्यता और भी पक्की हो जाती है कि वह पढ़-लिख नहीं सकता।

यही स्थिति एकान्त से निकलकर अनेकान्त को स्वीकारने की है। पहले तो विश्वास ही नहीं होता है कि दूसरे व्यक्ति के द्वारा मुझे भला-बुरा कहे जाने पर भी मैं चाहूँ तो मुझे क्रोध हो और न चाहूँ तो मुझे क्रोध न हो व यदि किसी ने बहुत आग्रह करके विश्वास दिलाने का प्रयास किया भी तो अभ्यास एवं विश्वास के अभाव में सफलता हाथ नहीं लगती है।

जैसे अनपढ़पन को दूर करने के लिए विश्वास के साथ पढ़ने का अभ्यास करना होता है उसी तरह अपने मनोभावों का नियंत्रण अपने हाथ में लाने के लिए भी विश्वास के साथ अभ्यास की आवश्यकता होती है। वीणा बजाना हो या तैरना हो, टाइपिंग हो या खाना बनाना, बिना अभ्यास के कुछ भी हाथ नहीं लगता है। **क्रमशः .....**

लेखक- डॉ. पारसमल अग्रवाल
११ भैरवधाम कॉलोनी
सेक्टर-३, हिरणमगरी, उदयपुर (राज.)

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास | भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | डॉ. अमृत लाल तापड़िया, संयुक्तमंत्री-न्यास

हेमन्त ऋतु

हेमन्त ऋतु का समय मार्गशीर्ष व पौष मास (१६ नवम्बर से १५ जनवरी) तक माना जाता है। इस ऋतु में शीतल वायु चलती रहती है। सूर्यदेव कुहरे से छिपे रहते हैं और जलाशय वर्फ से ढ़के रहते हैं। अतः शीतकाल की वायु से शरीर की रक्षा करनी चाहिए। ऊनी और सूती वस्त्र पहनने चाहिए। इस ऋतु हो शरीर में रूक्षता रहती है, जठराग्नि प्रदीप्त रहती है, गुरु स्निग्ध आहार भी आसानी से पच जाता है **अतः शक्तिवर्धक गुरु द्रव्यों का सेवन करना चाहिए**। शक्तिवर्धक आहार के सेवन से वर्षभर के लिए शरीर में शक्ति संचय हो जाता है। शरीर में रूक्षता होने से इस समय तेल की मालिश विशेष लाभदायक होती है।

बड़ी उम्र वाले लोगों को अपनी पाचन शक्ति को ध्यान में रखते हुए शक्तिवर्धक द्रव्यों का सेवन करना चाहिए। वृद्धावस्था में स्वभावतः पाचनशक्ति क्षीण होती है। अतः अपनी जठराग्नि का ध्यान रखते हुए पाचन क्षमता के अनुसार गुरु स्निग्ध पदार्थों का सेवन करें। इस ऋतु में दशमूलारिष्ट, मृत संजीवनी सुरा, अश्वगंधारिष्ट, द्राक्षासव, लोहासवा, कुमार्यासव आदि आसवारिष्टों का सेवन भोजनोपरान्त करने से रोगनिवृत्ति के साथ भोजन का पाचन आसानी से हो जाता है व शरीर की शक्ति बढ़ती है। विशेषतः बड़ी आयु वालों को इनका सेवन करना चाहिए।

सूर्य रश्मि चिकित्सा का विधान इस ऋतु में बताया गया है। निर्धूम अग्नि से तापना भी हितकर है। सूर्य रश्मि से पीठ की ओर व निर्धूम के अग्नि से पेट की ओर सेकना चाहिए जैसाकि तुलसीदास जी ने लिखा है- **'भानु पीठ सेईये उर आगी'**। शौचकर्म से पहले गुनगुना पानी पीना चाहिए। शौच निवृत्ति पश्चात् तेल की मालिस करके यथाशक्ति व्यायाम, प्राणायाम आदि करने चाहिए। इस ऋतु में रात्रि लम्बी होने से सुबह भूख अच्छी लगती है। अतः प्रातः काल लघु अल्पाहार लेना आवश्यक है।

इस मौसम में स्वच्छ खादी व ऊन के वस्त्र धारण करने चाहिए। रात्रि में स्वच्छ कमरे में ऊनी, सूती, रेशमी अथवा रूई के गर्म कपड़े ओढ़कर और बिछाकर सोवें। जूते, मौजे पहन लेने चाहिए । नंगे

पाँव नहीं रहें।

इस ऋतु के प्रारम्भ में विरेचन लेने से पूरी ऋतु सुखमय बीतती है। विवेचना हेतु निशोथ, चित्रक, पाठा, जीरा, देवदारू, बच, स्वर्णक्षीरी का योग इस ऋतु में अच्छा रहता है। जिन्हें अर्श (मस्से) की शिकायत हो वे विशोथ के स्थान पर बड़ी हरद का प्रयोग करें। वर्त्तमान समय में विरुद्ध आहार विहार व दिनचर्य्या के कारण हृदय रोग व पक्षाघात के रोगियों की संख्या बढ़ती जा रही है। हेमन्त ऋतु में शीतता व रूक्षता से धमनी संकुचन जन्य अवरोध होने से हृदयाघात व पक्षाघात होने की सम्भावना अधिक रहती है। अतः अपने आहार-विहार का ध्यान रखते हुए दिनचर्य्या व्यवस्थित रखें व लहसुन तथा अदरक का सेवन विशेष रूप से करते रहें।

हेमन्त ऋतु में हरड़ का प्रयोग– छोटी हरड़ के चूर्ण में सौंठ आधा भाग मिलाकर गर्म पानी के साथ लेने से शीतजन्य व्याधि, गठिया, जोड़ों का दर्द, अजीर्ण, उदरशूल, पेचिस, पेट का अफारा आदि सब उदर रोग ठीक होते हैं।

इस ऋतु में अग्नि बलवान रहती है। चन्द्रमा से भी बल अधिक मिलता है। इसलिए किसी का बल पुष्टिवर्धक पदार्थ लेने का सामर्थ्य नहीं हो तो भी नित्य व्यायाम करने व भरपेट आहार लेने से भी काम चल जाता है। प्रातः दूध पीने, च्यवनप्राश या बादामपाक लेने का यह उत्तम समय है। इस मौसम में कम पानी वाली अदरक की चाय ले सकते हैं।

यज्ञ चिकित्सा

कूठ, मूसली, घोड़ाबच, पित्तपापड़ा, कपूर, कपूर कचरी, गिलोय, पटोलपत्र, दालचीनी, भारंगी, सौंफ, मुनक्का गुग्गुल, अखरोट की गिरी, पुष्करमूल, छुहारे, गोखरू, कौंच के बीज, बादाम, मुलहठी, काले तिल, जावित्री, लाल चन्दन, मुश्कबाला, तालीसपत्र, गोला, तुम्बुरू, रास्ना, देवदारू, खाण्ड या बूरा, गोधृत, आम या खैर की समिधाओं से यज्ञ करने से हेमन्त ऋतु में होने वाले रोग नष्ट हो जाते हैं।

लेखक- वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त चिकित्साधिकारी
आयुर्वेद विभाग, राजस्थान

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री के. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छावड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल; बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत

कथा सरित

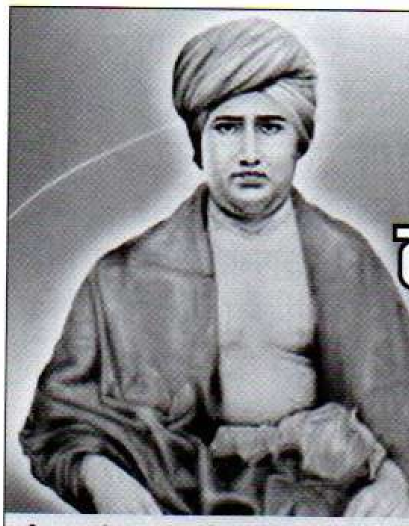

कहानी दयानन्द की

ग्वालियर के पश्चात् स्वामी जी करौली होते हुए जयपुर पहुँचे। मथुरा छोड़ने के पश्चात् ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी जी के मन में उस समय तक भी पूर्व संस्कारों का प्रभाव शेष था अथवा यूँ कहें कि अपने सिद्धान्तों का ठीक-ठीक निर्णय अभी नहीं हो पाया था और चिन्तन प्रक्रिया प्रारम्भ थी। इसमें कोई दोष भी नहीं है। वस्तुतः व्यक्ति अपनी आत्मा में जो सत्य समझता है उसी को मानना, उस पर चलना सत्य कहाएगा और अगर आगे चलकर उस व्यक्ति को यह निश्चय हो जाए कि जिसको वह सत्य समझता था वह सत्य नहीं परन्तु असत्य है तब फिर असत्य को त्याग करके सत्य को ही धारण करना मनुष्य को योग्य है। स्वामी जी के जीवन में यही देखने में आता है। उनका जीवन इसी सिद्धान्त से संचालित है। शिवरात्रि वाली घटना से पूर्व वे मूर्ति को ही शिव मानते थे उसी को परम शक्तिशाली मानते थे अतः उनके निकट उनकी आत्मा में यही सत्य था और इसी को वे श्रद्धापूर्वक स्वीकार करते थे। परंतु शिवरात्रि की घटना के दिन उन्हें निश्चय हुआ कि पत्थर की मूर्ति शिव कदापि नहीं है ना हो सकती है तो उसी दिन से बल्कि कहें उसी क्षण से पार्थिव पूजा से उन्हें विरक्ति हो गई। उस समय के पश्चात् एक भी उदाहरण ऐसा नहीं मिलता कि उन्होंने किसी मूर्ति के समक्ष सर झुकाया हो। यहाँ तक कि सारा जीवन स्वामी जी अनेक बार मन्दिरों में ठहरे परन्तु वहाँ भी उन्होंने ऐसा कोई उपक्रम किया हो यह ज्ञात नहीं होता। यही उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता है। **सामान्य व्यक्ति यह जानकर के भी कि सत्य क्या है, फिर भी असत्य में लिप्त रहता है, यही उसकी दुर्बलता है।**

जैसा हमने कहा कि मथुरा छोड़ने के पश्चात् कुछ वर्षों तक स्वामी जी पर शैव मत के पूर्व संस्कार थे ऐसा देखने में भी आता है। जैसे ग्वालियर में वे प्रतिदिन स्नान करके सूर्य को अर्घ्य देते थे, रुद्राक्ष की माला पहनते थे। रसोई भी वे किसी जन्मना ब्राह्मण के हाथ की बनाई हुई ग्रहण करते थे। लिंग पुराण और कूर्म पुराण को पढ़ने का उपदेश भी देते थे, देवी भागवत का मण्डन करते थे परन्तु कृष्ण भागवत का खण्डन करते थे इत्यादि-इत्यादि।

जयपुर के उनके प्रवास में तो यह स्थिति बिल्कुल स्पष्ट होकर के सामने आई। जब स्वामी जी जयपुर पहुँचे तो वहाँ शैव मत और वैष्णव मतवालों का भीषण मनमुटाव चल रहा था। जयपुर महाराजा राम सिंह जी यद्यपि शैवों की ओर झुके हुए थे परन्तु वैष्णव मन्दिरों या उनके महन्तों के विरुद्ध उन्होंने अपने आदेश से कुछ विरुद्ध किया हो ऐसा भी स्पष्ट नहीं होता। स्वामी जी के जयपुर प्रवास के सम्बन्ध में यह ज्ञात होता है कि वह भवानीराम बोहरे के बाग में ठहरे, फिर रामपुण्य दरोगा के बाग में चले गए।

स्वामी जी जहाँ जाते थे उन दिनों अत्यधिक प्रसिद्ध न होने के पश्चात् भी देखते-देखते उनके नाम की चर्चा होने लग जाती थी, क्योंकि वे शास्त्रार्थ को सत्य तक पहुँचाने का मुख्य मार्ग मानते थे और जहाँ भी जाते थे वहाँ पण्डितों से इस प्रकार की चर्चा मौखिक अथवा लिखित रूप में करते थे। यह भी यहीं से स्पष्ट हो जाता है कि विरोधी मत रखने वाले भी कम से कम स्वामी जी की विद्वता से सदैव सहमत रहे। यहाँ यह भी चर्चा कर दें तो अनुचित न होगा कि स्वामी जी कम से कम पण्डितों से शुद्ध उच्चारण की अपेक्षा किया करते थे। करौली प्रवास में उल्लेख मिलता है कि वहाँ के एक लब्ध प्रतिष्ठ पण्डित मनीराम ने संकल्प मंत्र में 'करिष्ये' के स्थान पर 'करिस्ये' बोला इसे सुनकर स्वामी जी ने वहाँ के महाराज की ओर देखकर के कहा कि आपका यह पण्डित मूर्ख है और आपकी सभा मूर्ख सभा है यह कहकर के स्थान छोड़कर के चले आए। यद्यपि इस व्यवहार को पाठकगण कठोर समझ सकते हैं परन्तु एक विद्या प्रेमी विद्या व्यसनी संन्यासी अगर किसी पण्डित कहे जाने वाले व्यक्ति से इतनी अपेक्षा करता है तो क्या गलत करता है? उच्चारण की शुद्धता से अर्थ की शुद्धता और शुचिता रहती है। उच्चारण दोष से अनर्थ भी हो जाता है। इसे विशेष कर आजकल आर्य समाज में भी समझने की आवश्यकता है।

जैसा हमने पूर्व में लिखा स्वामी जी के जयपुर प्रवास में वे शैव और वैष्णव पण्डितों के बीच में पड़ गए। शैव मत के पण्डितों को जब ज्ञात हुआ कि स्वामी जी का कुछ झुकाव शैवों की ओर है जो कि शरीर पर भस्म लगाने और रुद्राक्ष पहनने से भी प्रतीत होता था तो उन्होंने स्वामी जी को अपनी तरफ से शास्त्रार्थ करने के लिए सहमत किया और इसलिए स्वामी जी को वहाँ के राजा राम सिंह जी से मिलाने की भी योजना बनाई परन्तु एक पण्डित व्यास जी की इस सोच ने कि स्वामी जी इतने विद्वान् हैं कि अगर एक बार उनकी महाराज साहब से भेंट हो गई तो फिर वे यानी व्यास जी, महाराज की नजर से गिर जाएँगे, स्वामी जी को महाराज से मिलने नहीं दिया।

स्वामी जी ने शैव मत का पक्ष लेते हुए शास्त्रार्थ किया और वैष्णव मत के बारे में सिद्ध हुआ कि वेदों में वैष्णव मत का उल्लेख नहीं है। स्वामी जी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है 'वहाँ अर्थात् जयपुर में मैंने प्रथम वैष्णव मत का खण्डन करके शैव मत की स्थापना की। जयपुर के राजा महाराजा राम सिंह ने भी शैव मत को ग्रहण किया इससे शैव मत का फैलाव हुआ। सहस्रों रुद्राक्ष माला मैंने अपने हाथ से दीं। वहाँ शैव मत इतना पक्का हुआ कि हाथी घोड़े आदि के गलों में भी रुद्राक्ष की माला पहनाई गयीं।'

जयपुर में शैवों और वैष्णवों के बीच यह विवाद अत्यन्त उग्र हुआ परन्तु उसका उल्लेख यहाँ आवश्यक नहीं है। जयपुर प्रवास में अचरोल के ठाकुर आपके प्रति अत्यन्त श्रद्धावान हो गए और जब श्री महाराज जयपुर से पुष्कर जा रहे थे तो उन्होंने अपने कामदार को स्वामी जी के साथ इस कारण से भेजा कि पुष्कर के बाद उन्हें पुनः अचरोल लेकर आ जायँ।

उपरोक्त वर्णन में यह बात पूर्णतः प्रकाशित हो जाती है कि उस समय तक श्री महाराज शैव मत को वेद सम्मत मानते थे अथवा सत्य मानते थे इसीलिए उसका पक्ष लिया। **पर आगे हम देखते हैं कि उनके जीवन में से यह सभी असत्य धारणाएँ दूर हो गईं और उन्होंने दृढ़ होकर के केवल और केवल वेदमत के अनुसार अपने उपदेश के स्वरूप को निर्धारित किया।**

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

□□□

समाचार

चार दिवसीय स्वाध्याय एवं योगासन शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिनांक १६ अक्टूबर से २२ अक्टूबर २०२३ तक स्वाध्याय एवं योगासन शिविर का आयोजन श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास; नवलखा महल, उदयपुर (राज.) में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। न्यास अध्यक्ष श्री अशोक आर्य के करकमलों से शिविर का उद्घाटन हुआ इस अवसर पर उन्होंने स्वाध्याय को उन्नति का मूल मंत्र बताया। आपने न्यास द्वारा संचालित

सभी प्रकल्पों, गतिविधियों व आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा को साथ रहकर बताया एवं दिखाया। डॉ.मुकेश आर्य (शिविर संयोजक) ने सभी से दिनचर्या पालन एवं आर्ष साहित्य के पठन-पाठन की बात कही।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र एवं गोकरुणा निधि का स्वाध्याय आचार्य भद्रकाम वर्णी द्वारा बहुत कुशलता से करवाया गया। श्री अशोक जैन द्वारा योगासन करवाए गए। प्रतिदिन स्वाध्याय कक्षाएँ, प्रातः-सायं यज्ञ, संध्या तथा रात्रिकालीन भजन, सत्संग की सुन्दर व्यवस्था रही। समापन के अवसर पर आर्य सतीश चड्ढा महामंत्री-आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली शिविर अध्यक्ष ने स्वाध्याय को वर्तमान युग की महती आवश्यकता बताया। श्रीमान् धर्मपाल आर्य-प्रधान, श्री विनय आर्य-महामंत्री, सुखवीर आर्य-मंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपनी शुभकामनाएँ फोन द्वारा प्रेषित की। देवेन्द्र सचदेवा, राजकुमार शर्मा, एस.पी.सिंह, हरिओम शास्त्री तथा शाहबाद दिल्ली की माताओं ने यथा समय अपने विचार व भजन प्रस्तुत किए। इस अवसर पर सभी शिविरार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पुरोहित श्री नवनीत आर्य जी ने आवास, भोजन व्यवस्था एवं अन्य उपयोगी व्यवस्थाओं में यथासम्भव सहयोग प्रदान किया। इस नाते हम पुरोहित जी एवं न्यास के सभी अधिकारियों का आभार व्यक्त करते हैं।

शिविर संयोजक- मुकेश आर्य 'सुधीर'

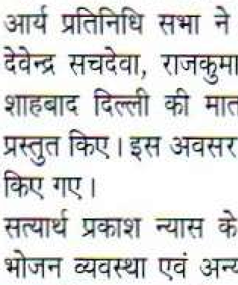

गुरुकुल कांगडी के संस्थापक, महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, शुद्धि आन्दोलन के जनक, देशहित एवं धर्महित के लिए अपने प्राणों को न्योछावर करने वाले सन्त शिरोमणि स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से शतशः नमन।

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस के अवसर पर एकता दिवस का आयोजन

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, उदयपुर एवं संदीपनी सेवा परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में ३१ अक्टूबर २०२३ को लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस के अवसर पर एकता दिवस का आयोजन न्यास परिसर में किया गया। इस अवसर पर न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने कहा कि देश १९४७ में स्वतंत्र हुआ उस समय देश में कई रियासतें थी उनके एकीकरण के लिए लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने जो प्रयास किए उसके फलस्वरूप अखण्ड भारत का निर्माण हुआ। उन रियासतों के एकीकरण का कार्य बड़ी चुनौती था क्योंकि कई रियासतों के प्रमुख पाकिस्तान में विलय चाहते थे परन्तु वहाँ की जनता भारत में विलय चाहती थी तथा कुछ रियासतें स्वतंत्र होना चाहती थी। परन्तु सरदार वल्लभ भाई पटेल के दृढ़ निश्चय के कारण एकीकरण का सपना साकार हुआ।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल परिसर में तैयार की गई संस्कार वीथिका के अन्तर्गत क्रान्तिकारियों को स्मृत करने के लिए देश की स्वतंत्रता के संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले स्मृत और विस्मृत क्रान्तिकारियों की स्मृति में राष्ट्रोन्नायक वीथिका का

निर्माण किया गया है तथा 'मानव तू मानव बन' इस ध्येय को ध्यान में रखते हुए जीवन्त रूप में दृश्यमान १६ संस्कार वीथिका का निर्माण किया गया है। इसी प्रकार महापुरुषों के कार्यों को सरल रूप में प्रकट करने के लिए चित्रदीर्घा का निर्माण किया गया है। दानदाताओं के सहयोग से कई प्रकल्प यहाँ चलाये जा रहे हैं। यहाँ सुरेश चन्द्र आर्य दीनदयाल गुप्त मल्टीमीडिया मिनी थियेटर का भी निर्माण किया गया है जहाँ आने वाले दर्शनार्थियों को राष्ट्र प्रेम की भावना जनमानस में जागृत करने हेतु एक लघु फिल्म दिखायी जाती है। **आज एकता दिवस के अवसर पर इस थियेटर में सरदार वल्लभ भाई पटेल के जीवन पर आधारित एक लघु फिल्म दिखाई गई।**

इस अवसर पर संदीपनी सेवा परिषद् के पदाधिकारी श्री गोपाल जी शर्मा के नेतृत्व में परिषद् के पदाधिकारियों ने नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र का अवलोकन किया और यहाँ से चलाए जा रहे प्रकल्पों की सराहना की और कहा कि उदयपुर आने वाले पर्यटकों को नवलखा महल का दर्शन अवश्य करना चाहिए जहाँ से राष्ट्र प्रेम के साथ साथ संस्कारों के संचरण की शिक्षा मिलती है।

इस अवसर पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के मंत्री श्री भवानी दास आर्य, संयुक्त मंत्री डॉ.अमृतलाल तापड़िया, कार्यालय मंत्री श्री भंवर लाल गर्ग, पुरोहित श्री नवनीत कुमार आर्य, श्री देवीलाल पारगी, श्री लक्ष्मण, श्री कालू, श्रीमती निरमा, दिव्येश सुथार, सुश्री करिश्मा आदि उपस्थित थे।

- भवानीदास आर्य; अध्यक्ष

हलचल

कुटिल व्यक्ति कानून के घेरे में

अहमदाबाद शहर का यह यश तिवारी यूट्यूब पर तथा इंस्टाग्राम पर 'आर्य समाज विनाशक' नामक चैनल चलाता था और उस पर वेदों की

मनगढ़ंत व्याख्या करके एवं महर्षि दयानन्द के प्रति गंदे पोस्ट डालकर दुष्प्रचार करता था। हम इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त करते हैं कि ऐसे कुटिल व्यक्ति को कानून ने अपने घेरे में ले लिया है। हमें आशा है कि आगे भी उसे न्यायालय के द्वारा इस कुकर्म के लिए कठोर से कठोर सजा मिलेगी।

विनम्र श्रद्धांजलि

एक क्रान्तिकारी, सत्यनिष्ठ, तपस्वी, स्पष्टवादी, निर्भीक, वेदभक्त, देशभक्त एवं ऋषिभक्त आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती अब हमारे बीच नहीं रहे। उनका श्वास अवरुद्ध होने से आर्यसमाज सासनी गेट, अलीगढ़ में निधन हो गया। आप लगभग १०५ वर्ष की आयु में भी कैंसर से साहसपूर्वक जूझते रहे। आप भारतीय सेना से सेवानिवृत्त थे, जिन्होंने अपनी पेंशन भी राष्ट्रहित में सेना को ही सदैव के लिए समर्पित कर दी। वे इस आयु में भी युवाओं की भाँति सदैव उत्साह से ओतप्रोत रहते थे। अहर्निश आर्यसमाज और राष्ट्र के विषय में ही चिन्तन करते रहते थे। आपने अपने जीवन के ६० साल आर्यसमाज की सेवा में लगाये।

आपके निधन पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार सश्रद्ध श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

संजीव जी चौरसिया को मातृशोक

बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान, सिक्किम राज्य के पूर्व राज्यपाल सुप्रसिद्ध आर्यनेता माननीय बाबू गंगा प्रसाद जी की सहधर्मिणी और बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान प्रधान भाई संजीव जी चौरसिया की माताजी के निधन का समाचार सुनकर हम सभी स्तब्ध रह गए हैं। अपने पति की सहधर्मिणी के रूप में स्वर्गीय माताजी ने कदम-कदम पर बाबूजी का साथ इस प्रकार दिया कि वे अपने सामाजिक कार्यों और दायित्वों का निर्वहन कर पाए। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के समस्त न्यासीगण एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्य अपनी ओर से विनम्र श्रद्धांजलि प्रदान करते हैं।

बहुत याद आते हैं महाशय जी

३ दिसम्बर। आर्यजगत् के ऐसे सुप्रसिद्ध व्यक्तित्व, जिनके उदात्त व्यक्तित्व का, अगर कोई लेखक या कवि वर्णन करने लगे तो शब्दकोष अपर्याप्त हो जायं, जिन्होंने मानवता के जिस दिव्य स्वरूप का व्याख्यान अपने श्रीमुख से नहीं वरन् अपने जीवन से किया और जो हमें सन्मार्ग के पथ पर ले जाने के लिए समय की रेत पर अपने पवित्र चरणों के निशान छोड़कर, अनन्त की यात्रा पर आज के ही दिन प्रस्थान कर गए, ऐसे कर्मयोगी भामाशाह, इस न्यास के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके पदचिह्नों का अनुसरण करने का हम व्रत लेते हैं।

- अशोक आर्य एवं न्यास के समस्त न्यासीगण

Fit Hai Boss
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 December-2023 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

तब बारह शिष्यों में से एक यिहूदा इस्करियोती नाम एक शिष्य प्रधान याजकों के पास गया।। और कहा जो मैं यीशु को आप लोगों के हाथ पकड़वाऊँ तो आप लोग मुझे क्या देंगे? उन्होंने उसे तीस रुपये देने को ठहराया।। -इं. म. प. २६। आ. १४/१५

समीक्षक-अब देखिये! ईसा की सब करामात और ईश्वरता यहाँ खुल गई। क्योंकि जो उसका प्रधान शिष्य था, वह भी उसके साक्षात् संग से पवित्रात्मा न हुआ तो औरों को वह मरे पीछे पवित्रात्मा क्या कर सकेगा? और उसके विश्वासी लोग उसके भरोसे में कितने ठगाये जाते हैं, क्योंकि जिसने साक्षात् सम्बन्ध में शिष्य का कुछ कल्याण न किया, वह मरे पीछे किसी का कल्याण क्या कर सकेगा? सत्यार्थ प्रकाश त्रयोदश समुल्लास पृष्ठ ४९१

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, [illegible] महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित. सम्पादक- अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर